

## अध्याय – 03 || Chapter - 03

### ब्रिटिश कालीन आर्थिक नीतियां || British Economic Policies

पृष्ठभूमि	01				06	आधुनिक उद्योगों का विकास
उपनिवेशवाद	02				07	रेलवे का विकास
भू राजस्व व्यवस्था	03				08	धन का निष्कासन
कृषि का वाणिज्यकरण	04				09	ब्रिटिश भारत में अकाल नीति
विऔद्योगिकरण	05				10	भारत में बैंकिंग प्रणाली

## Chapter - 03

### British Economic Policies

- Background** 01
- Colonialism** 02
- Land Revenue System** 03
- Commercialization of Agriculture** 04
- Deindustrialization** 05



- 06 **Development of modern industries**
- 07 **Development of Railways**
- 08 **Drain of wealth**
- 09 **British famine policies**
- 10 **Banking System in India**

## Previous Year Question

<b>2019</b>	<b>Short</b>	1) भारतीय उद्योग और व्यापार पर ब्रिटिश शासन के प्रभाव का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए    Critically examine impact of British rule kauwa Indian industry and trade .
<b>2019</b>	<b>Short</b>	2) "ब्रिटिश शासन ने भारत में दरिद्रता को बढ़ाया " इस कथन की तथ्यों के प्रकाश में समीक्षा कीजिए    "British rule increased poverty in India " review this statement in the light of the facts.
<b>2018</b>	<b>Short</b>	3) आर्थिक दोहन की व्याख्या कीजिए तथा इसके कारणों की समीक्षा कीजिए    Explain 'economic drain' and discuss its causes.
<b>2016</b>	<b>Short</b>	4) स्थाई बंदोबस्त ने कृषकों को किस प्रकार प्रभावित किया ? वर्णन कीजिए    In what way did the permanent settlement affect the prasants ? Discuss .
<b>2016</b>	<b>Short</b>	5) भारत में परंपरागत कुटीर उद्योगों के पतन के कारण लिखिए    Write the causes of decline of traditional cottage industries in India.
<b>2015</b>	<b>Long</b>	6) ब्रिटिश आर्थिक नीतियों का भारतीय अर्थव्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ा ? वर्णन कीजिए    What was the effect of British economic policies on Indian economy? Discuss.
<b>2020</b>	<b>Short</b>	7) भारत में परंपरागत कुटीर उद्योगों के पतन के कारण लिखिए    Write the causes of decline of traditional cottage industries in India.

### 3.1) पृष्ठभूमि || Background

#### -: ब्रिटिश उपनिवेश पूर्व :-

- आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था
- मुख्य व्यवसाय - कृषि
- व्यापार आधिक्य(निर्यात>आयात)
- रेशम, सूती वस्त्र, मसाले, नील, अफीम का निर्यात
- अंतिम वस्तुओं का निर्यात



#### -: ब्रिटिश उपनिवेश उपरांत :-

- कृषक दरिद्रता व ऋणग्रस्तता
- विऔद्योगिकरण
- व्यापार घाटा
- इंग्लैंड की औद्योगिक क्रांति हेतु भारत से कच्चे माल का निर्यात और अंतिम उत्पाद का आयात
- धन का निष्कासन



## 3.1) Background

### -: Pre-British Colonization:-

- Self-sustaining rural economy
- Main occupation - agriculture
- Trade surplus (export>import)
- Export of silk, cotton, spices, indigo, opium
- Export of final goods



### -: After British Colonization:-

- Farmer poverty and indebtedness
- Deindustrialization
- Trade deficit
- Export of raw materials and import of final products from India for the Industrial Revolution of England
- Drain of wealth



## 3.2) उपनिवेशवाद || Colonialism

- 1) **परिभाषा :-** एक देश द्वारा दूसरे देश पर आर्थिक शोषण करने के उद्देश्य से आधिपत्य स्थापित करना
- 2) **चरण :-** रजनी पाम दत्त ने अपनी पुस्तक इंडिया टुडे में निम्न तीन चरण बताए -
  - ‡ **वाणिज्यिक पूंजीवाद चरण :-** भारत से धन का निष्कासन तथा भारत के व्यापार पर कंपनी का एकाधिकार (1757-1813 ई)
  - ‡ **औद्योगिक पूंजीवाद चरण :-** मुक्त व्यापार की नीति तथा कंपनी के एकाधिकार की समाप्ति (1813-1860 ई)
  - ‡ **वित्तीय पूंजीवाद चरण :-** ब्रिटिश पूंजी का भारत में निवेश (1860-1947 ई)

## (i) वाणिज्यिक पूंजीवाद चरण || Phase of Commercial Capitalism (1757-1813)

- 1) **उद्देश्य :-** यह चरण प्लासी विजयोपरांत प्रारंभ हुआ, जिसके निम्नलिखित उद्देश्य थे -
  - ‡ प्रतिद्वंद्वियों को समाप्त करके भारतीय व्यापार पर एकाधिकार
  - ‡ भारत से न्यूनतम मूल्यों पर वस्तुएं खरीददार, यूरोप में अधिकतम मूल्य पर बेचना
  - ‡ व्यापार व साम्राज्यवाद हेतु भारतीय धन का उपयोग करने हेतु राजनैतिक नियंत्रण (घेरे की नीति)
- 2) **प्रभाव :-**
  - ‡ खुली और बेशर्म लूट - **पर्सिवल स्पीयर**
  - ‡ भारतीय हस्तकला उद्योग का विनाश
  - ‡ बंगाल की लूट से ब्रिटेन में औद्योगिकरण

## 3.2) Colonialism

- 1) **Definition :-** Establishment of hegemony by one country for the purpose of economic exploitation of another country
- 2) **Steps :-** Rajni Pam Dutt in her book India Today explains the following three steps -
  - ≠ **Commercial Capitalism Phase :-** Expulsion of wealth from India and Company's monopoly on India's trade (1757-1813 AD)
  - ≠ **Industrial Capitalism Phase :-** Policy of Free Trade and End of Company Monopoly (1813-1860 AD)
  - ≠ **Financial Capitalism Phase :-** Investment of British Capital in India (1860-1947 AD)

### (i) Phase of Commercial Capitalism (1757-1813)

- 1) **Objective :-** This phase started after the Plassey conquest, which had the following objectives -
  - ≠ Monopoly on Indian trade by eliminating rivals
  - ≠ Buying goods from India at the lowest prices & selling them at highest prices in Europe
  - ≠ Political control to use Indian money for trade and imperialism (policy of ring fence)
- 2) **Influence :-**
  - ≠ Open And Shameless loot - **Percival Spear**
  - ≠ The destruction of the Indian handicraft industry
  - ≠ Industrialization in Britain by the loot of Bengal

## (ii) औद्योगिक पूंजीवाद का चरण (1813-60)

### Phase of Industrial Capitalism

- 1) इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति के बाद इस चरण का आरंभ, जिसकी निम्नलिखित विशेषताएं हैं :-
  - ‡ इंग्लैंड के उद्योगों हेतु भारत कच्चे माल का निर्यात
  - ‡ ब्रिटिश उद्योगों द्वारा निर्मित उत्पादों का भारत में आयात
  - ‡ 1813 के चार्टर द्वारा कंपनी के एकाधिकार की समाप्ति व मुक्त व्यापार की नीति
  - ‡ विभेदकारी सीमा शुल्क

### 2) प्रभाव :-

- ‡ भारत में व्यापार घाटा (निर्यात < आयात)
- ‡ विभेदकारी सीमा शुल्क से स्थानीय उद्योगों का विनाश
- ‡ व्यापारिक फसलों के अधिक उत्पादन से खाद्यान्न संकट
- ‡ रेलवे व अंग्रेजी शिक्षा
- ‡ भारतीय क्षेत्रों का विलय व सांस्कृतिक हस्तक्षेप

## (iii) वित्तीय पूंजीवाद चरण (1860-1947)

### Phase of financial capitalism

- 1) ब्रिटेन में औद्योगिक पूंजीपतियों के पास धन आधिक्य के कारण इस चरण का आरम्भ हुआ, जिसकी निम्न विशेषताएं हैं :-
  - ‡ लाभ प्राप्ति हेतु भारत में निवेश (मुख्यतः रेलवे 5%-लाभांश)
  - ‡ बागानी कृषि, खनन आदि में निवेश
  - ‡ भारत में बैंकिंग, बीमा, जहाजरानी उद्योग में निवेश
  - ‡ भारत सरकार को ऋण (1939 तक 88 करोड़)

### 2) प्रभाव :-

- ‡ भारत में आधुनिक बैंकों की स्थापना
- ‡ भारत के उद्योगों का विनाश
- ‡ भारत में राष्ट्रीय चेतना का विकास



## (ii) Phase of Industrial Capitalism (1813-60)

- 1) This phase began after the Industrial Revolution in England, which has the following characteristics :-
  - ⌘ India's export of raw materials to the industries of England
  - ⌘ Import of final products from British industries into India
  - ⌘ Abolition of Company's monopoly and free trade policy by Charter of 1813
  - ⌘ Discriminatory customs

### 2) Effect :-

- ⌘ Trade Deficit in India (Export<Import)
- ⌘ The destruction of local industries by discriminatory customs duties
- ⌘ Food crisis due to over production of commercial crops
- ⌘ Railway and English Education
- ⌘ Indian territories merger and cultural intervention

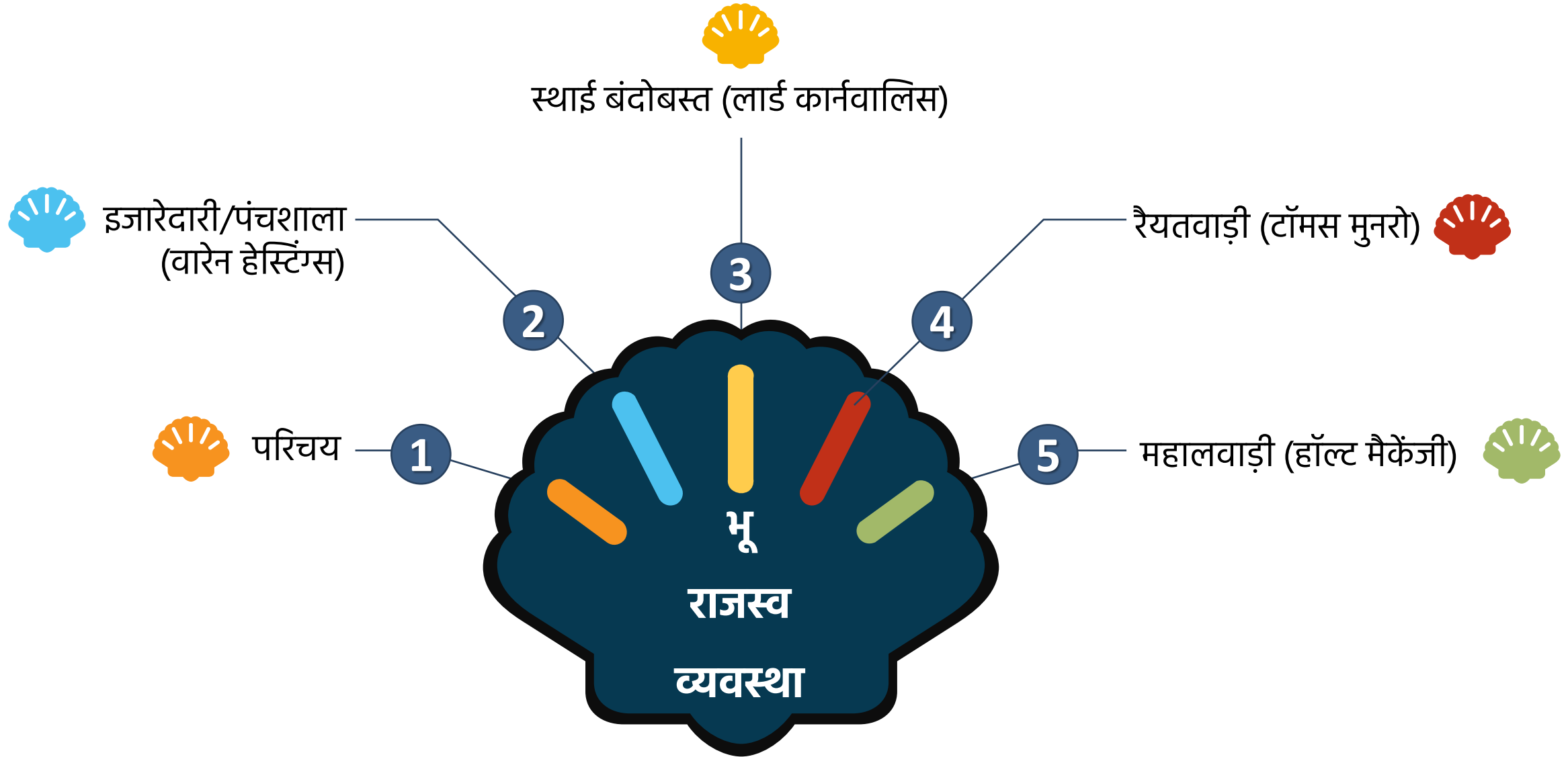
## (iii) Phase of financial capitalism (1860-1947)

- 1) In Britain, this phase started due to the surplus of money with the industrial capitalists, which has the following characteristics: :-
  - ⌘ Investment in India for profit (mainly in Railways 5%- Dividend)
  - ⌘ Investment in plantation, agriculture, mining
  - ⌘ Investment in banking, insurance, shipping industry in India
  - ⌘ Loans to Government of India (88 crores till 1939)

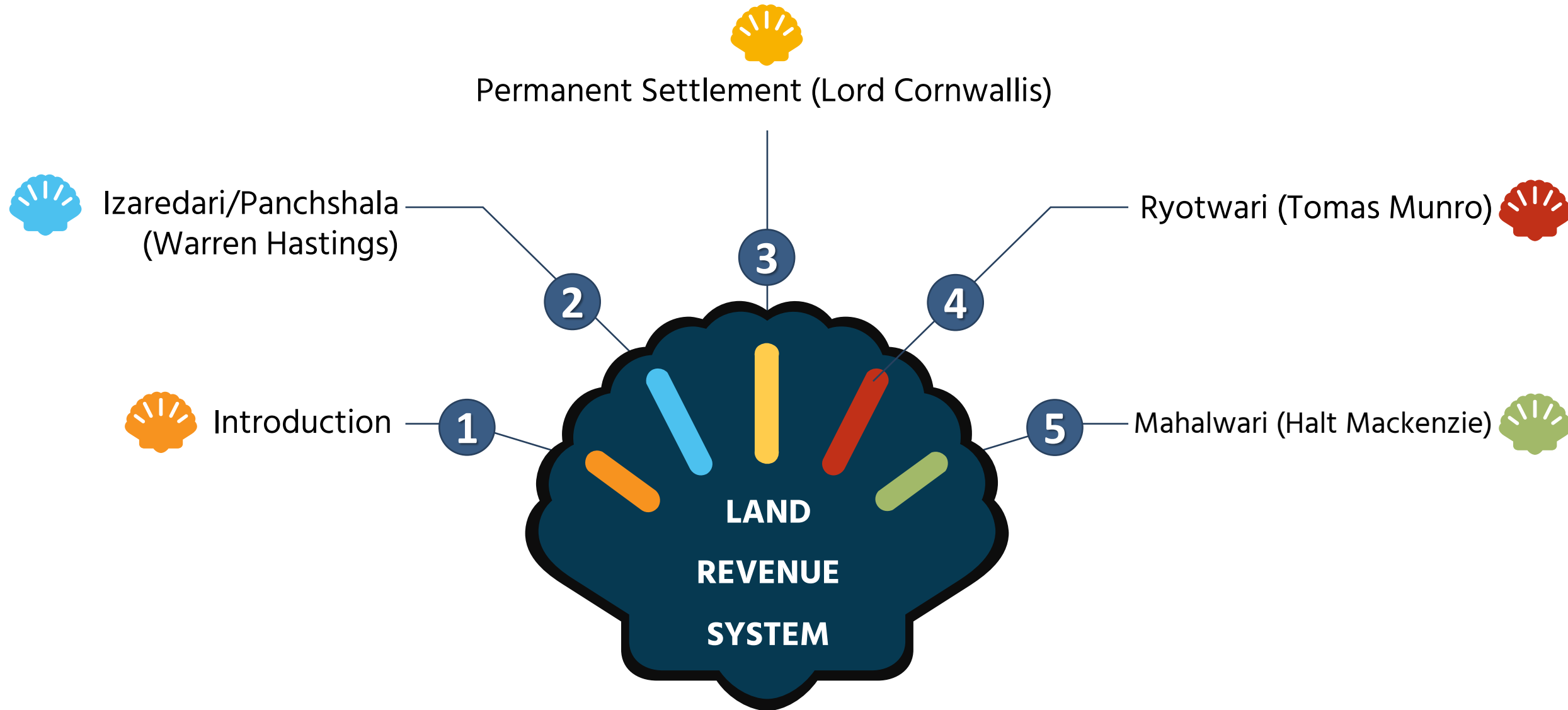
### 2) Effect :-

- ⌘ Establishment of modern banks in India
- ⌘ destruction of India's industries
- ⌘ Development of National Consciousness in India

### 3.3) ब्रिटिशकालीन भू राजस्व व्यवस्था || British Land Revenue System



### 3.3) British Land Revenue System



## 1) परिचय || Introduction

1) भारत में **साम्राज्यवादी विस्तार, निवेश व लाभ** हेतु निम्न भू राजस्व नीतियां :-

- ‡ इजारेदारी/पंचशाला (वारेन हेस्टिंग्स)
- ‡ स्थाई बंदोबस्त (लार्ड कार्नवालिस)
- ‡ रैयतवाड़ी (टॉमस मुनरो)
- ‡ महालवाड़ी (हॉल्ट मैकेंजी)

2) **परिणाम :-** कृषक निर्धनता व धन का निष्कासन

## 2) इजारेदारी/पंचशाला (वारेन हेस्टिंग्स)

1) **प्रवर्तक** - वारेन हेस्टिंग्स

2) **क्षेत्र** - बंगाल और बिहार

3) **इजारेदार** - जमीदार / ठेकेदार

4) **व्यवस्था :-**

℥ सबसे अधिक बोली लगाने वाले को भूमि का ठेका

℥ यह ठेका पंचवर्षीय था

5) **परिणाम :-**

℥ असफल

℥ 1777 में एकवर्षीय रूप में परिवर्तन



## 1) Introduction

1) Land revenue policies for **imperial expansion, investment and profit** in India :-

- ⌘ Izaredari Settlement (Warren Hastings)
- ⌘ Permanent Settlement (Lord Cornwallis)
- ⌘ Ryotwari (Tomas Munro)
- ⌘ Mahalwari (Halt Mackenzie)

**2) Result :-** Farmer poverty and drain of wealth

## 2) Izaredari/Panchshala (Warren Hastings)

1) **Promoter** - Warren Hastings

2) **Region** - Bengal and Bihar

3) **Izaredari** - Landlord

4) **System :-**

- ℒ Land revenue contract to the highest bidder
- ℒ This contract was five years

5) **Result :-**

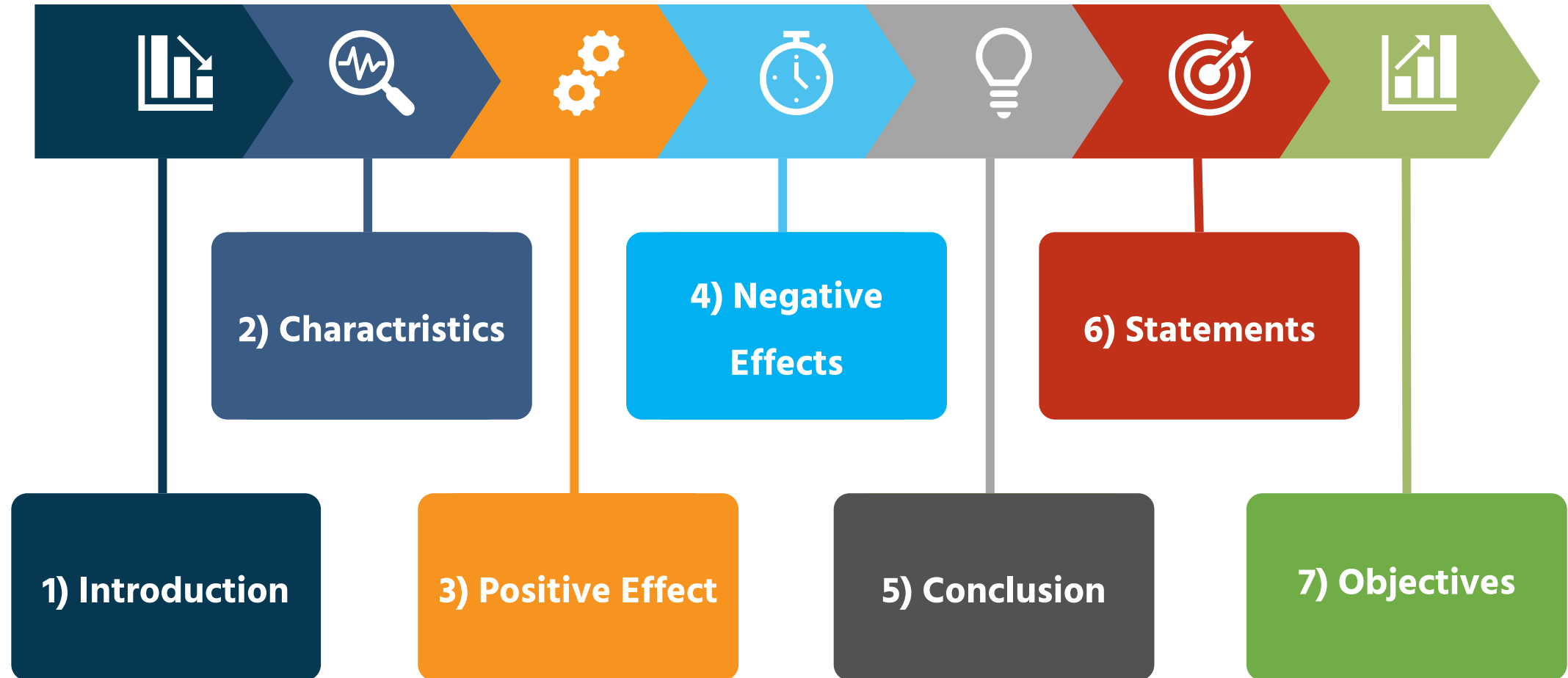
- ℒ Fail
- ℒ Change to one-year form in 1777



### 3) स्थाई बंदोबस्त Permanent settlement



### 3) Permanent settlement



## 1) परिचय व पृष्ठभूमि

- 1) भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवादी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु भू-राजस्व मुख्य स्रोत था
- 2) उन्होंने द्वैध शासन, इजारेदारी आदि के द्वारा भू राजस्व वसूला परंतु उनमें अत्याधिक भ्रष्टाचार तथा अनियमितताएं थीं
- 3) पिट्स इंडिया एक्ट 1784 के माध्यम से कंपनी को **बंगाल में स्थाई भू प्रबंध** करने का सुझाव दिया गया
- 4) **1786 में कार्नवालिस** बंगाल का गवर्नर जनरल बना - भू राजस्व व्यवस्था की समस्या पर विचार के लिए **रेवेन्यू बोर्ड** का गठन



- ≠ **जॉन शोर :-** जमींदारों को भूस्वामी माना जाए
- ≠ **चार्ल्स ग्रांट :-** सरकार को भूस्वामी माना जाए

- 5) कार्नवालिस ने जमींदारों को लगान वसूल करने का अधिकार दिया । 1790 में वार्षिक लगान की जगह 10 वर्षीय लगान व्यवस्था लागू की गई किंतु **22 मार्च 1793** में इसी व्यवस्था को स्थाई कर दिया गया जिसे **स्थाई बंदोबस्त, इस्तमरारी बंदोबस्त, जमींदारी व्यवस्था या जागीरदारी व्यवस्था अथवा मालगुजारी** व्यवस्था भी कहा गया

## 2) विशेषताएं

- 1) **आरम्भकर्ता :-** लार्ड कार्नवालिस(1793)
- 2) **क्षेत्र :-** बंगाल, बिहार, उड़ीसा, वाराणसी, उत्तरी कर्नाटक (कुल भूमि का 19%)
- 3) जमींदारों को भूमि का स्थायी मालिक बना दिया गया। भूमि पर उनका अधिकार पैतृक एवं हस्तांतरणीय था उन्हें उनकी भूमि से तब तक पृथक् नहीं किया जा सकता था, जब तक वे अपना निश्चित लगान सरकार को देते रहें



## 1) Introduction and Background

- 1) The land revenue was the main source for meeting the British imperialist needs in India.
- 2) They collected land revenue through diarchy, izaredari etc. but there was a lot of corruption and irregularities in them.
- 3) Through Pitt's India Act 1784 the Company was suggested to make permanent land management in Bengal.
- 4) Cornwallis became Governor General of Bengal in 1786 - Revenue Board formed to investigate the problem of land revenue system



- ≠ **John Shore :-** zamindars should be landowners
- ≠ **Charles Grant :-** Government should be landowner

- 5) Cornwallis gave the right to collect rent to the zamindars. In 1790, instead of the annual rent, the 10-year rent system was introduced, but on 22 March 1793, this system was made permanent, which was also called permanent settlement, *istamrari*, zamindari system or *jagirdari* or *malguzari*.

## 2) Characteristics

- 1) **Initiator :-** Lord Cornwallis (1793)
- 2) **Area :-** Bengal, Bihar, Odisha, Varanasi, North Karnataka (19% of total british india land)
- 3) Zamindars were made permanent owners of the land. Their right on the land was paternal and transferable, they could not be separated from their land if they continued to pay their fixed rent to the government.

4) सरकार का किसानों से कोई प्रत्यक्ष सम्पर्क नहीं

### 5) भू राजस्व दर :-

≠ कंपनी - कुल रकम का 10/11

≠ जमींदार - कुल रकम का 1/11

6) तय की गई रकम से अधिक वसूली करने पर, उसे रखने का अधिकार **जमींदारों** को दे दिया गया गया

7) **सूर्यास्त कानून :-** लगान चुकाने की निर्धारित तिथि के सूर्यास्त तक लगान न चुकाने पर जमींदार की भूमि नीलाम कर दी जाती

8) ज़मींदार कृषकों की चल और अचल सम्पत्ति का अधिग्रहण कर सकते थे।

9) इस व्यवस्था के अंतर्गत ज़मींदार की मृत्यु होने के पश्चात् उसकी भूमि पर उसके उत्तराधिकारियों का अधिकार होता था तथा भूमि चल सम्पत्ति की भाँति विभाजित कर दी जाती थी।

## 3) स्थाई बंदोबस्त के सकारात्मक प्रभाव

1) **ब्रिटिश सरकार की निश्चित आय :-** बजट व प्राशसनिक योजना निर्माण में सरलता

2) **ब्रिटिश समर्थित भारतीय जमींदार वर्ग का उदय :-** भारतीय विद्रोह कुचलने में सरलता

3) सरकारी अपव्यय में कमी व आय वृद्धि

4) **भारतीय जमींदार अत्याधिक समृद्ध :-**

≠ कृषि का वाणिज्यीकरण

≠ भारत में उद्योग, व्यापार व शैक्षणिक विकास

≠ राष्ट्रीय आंदोलन में सहायक

4) Government has no direct contact with farmers

**5) Land revenue rate :-**

‡ Company - 10/11 of the total amount

‡ Zamindar - 1/11 of the total amount

6) Surplus revenue will be kept to Zamindar.

**7) Sunset Clause :-** Land of the zamindar would have been auctioned if the rent was not paid by the sunset of the scheduled date of payment of rent.

8) The zamindars could acquire movable and immovable property of the farmers.

9) Under this system, after the death of the zamindar, his heirs had the right over his land and the land was divided like movable property.

### 3) Positive Effects of Permanent Settlement

**1) Fix income of British government :-** Ease in making budget and administrative plans

**2) Rise of the British supported Indian Landlord Class :-**  
Ease in suppressing Indian rebellion

3) Reduction in government expenditure and increase in income

**4) Indian landlords' prosperity:-**

‡ commercialization of agriculture

‡ Industry, Business and Educational Development in India

‡ Supported in the national movement

#### 4) स्थाई बंदोबस्त के नकारात्मक प्रभाव

##### 1) कृषक दुर्दशा :-

- ‡ भूमि के परंपरागत अधिकारों की समाप्ति
  - ‡ जमींदारों द्वारा अधिक उत्पादन हेतु प्रताड़ना
  - ‡ कृषक कर्जदार होते गए
- 2) कृषि के वाणिज्यीकरण से खाद्यान्न उत्पादन में कमी
  - 3) दूरवासी जमींदारी प्रथा से उपसामन्तीकरण
  - 4) कृषि उत्पादकता में कमी
  - 5) भूमि का क्रय विक्रय

स्थायी बंदोबस्त ने कृषि आधारित अर्थव्यवस्था को बाहरी चोट पहुंचाई किसानों का निर्धनीकरण हुआ अकाल की बारंबारता बढ़ी। इस पद्धति को लागू करने में ब्रिटिश को इस दृष्टि से साहसी माना जाता है कि उन्होंने पहली बार संपत्ति अधिकारों की स्पष्ट पहचान की और जमींदार बिचौलियों को भूस्वामी बना दिया

#### 5) उद्देश्य

- 1) भू राजस्व की अधिकतम राशि स्थाई रूप से प्राप्त करना
- 2) भारत में एक ऐसे समर्थक वर्ग का निर्माण करना जो ब्रिटिश सहयोगी हो
- 3) प्रशासनिक कठिनाइयों से बचते हुए ब्रिटिश आर्थिक हित प्राप्त करना
- 4) कृषि का विकास करना

#### 4) Negative Effects of Permanent Settlement

##### 1) Farmer's plights :-

- ‡ Termination of traditional rights to land
  - ‡ Repression by landlords for more production
  - ‡ Farmers became indebted
- 2) Commercialization of agriculture reduced food production
  - 3) Sub-feudalization from the remote zamindari system
  - 4) Reduction in agricultural productivity
  - 5) Sale and purchase of land
  - 6) The permanent settlement caused an external injury to the agrarian economy, the peasants became impoverished, the frequency of famines increased. The British are considered courageous in applying this method, they clearly identified property rights for the first time and made landlord and middleman the landowners.

#### 5) Objective

- 1) Getting the maximum amount of land revenue permanently
- 2) To create a supporter class in India who si associates to british.
- 3) To achieve British economic interest while avoiding administrative difficulties
- 4) develop agriculture

## 6) कथन

- 1) **आर. सी. दत्त के अनुसार :-** "यदि स्थायी बन्दोबस्त का उद्देश्य बंगाल में पूर्णतया राजभक्त ज़मींदारों को उत्पन्न करना था तो इस उद्देश्य की पूर्ति में अत्यधिक सफलता प्राप्त हुई।"
- 2) **पी. ई. राबर्ट्स के अनुसार :-** "स्थायी भूमि-व्यवस्था ने ब्रिटिश शासन को स्थायित्व और लोकप्रियता प्रदान की। प्रान्त को सबसे अधिक समृद्धिशाली बनाने में सहायता प्राप्त हुई।"
- 3) **आर. सी. दत्त के अनुसार :-** "लार्ड कार्नवालिस का 1793 ई. का स्थायी बन्दोबस्त बुद्धिमत्तापूर्ण और सफल था जिसने भारत में ब्रिटिश शासन के स्थायित्व को योगदान दिया।"
- 4) **बेवरीज के अनुसार :-** "यह भयानक भूल तथा अन्याय पर आधारित योजना थी जिसमें केवल ज़मींदारों के साथ समझौता हुआ जबकि कृषकों के अधिकारों की पूर्ण रूप से उपेक्षा की गई।"
- 5) **इस विषय में कारवर (Carver) महोदय ने लिखा है :-** "इस व्यवस्था ने अनुपस्थित ज़मींदारों का एक ऐसा वर्ग निर्मित किया जो ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था के लिए युद्ध, अकाल तथा महामारी जैसा घातक सिद्ध हुआ।"
- 6) **पी. ई. राबर्ट्स के अनुसार :-** "यदि स्थायी बन्दोबस्त केवल दस या बीस वर्षों के लिए लागू होता तो निश्चय ही उत्तरवर्ती (बाद में आने वाली) त्रुटियों को दूर किया जा सकता था।"

## 6) Statements

- 1) **According to R.C. dutt :-** "If the object of the Permanent Settlement was to produce completely loyalist zamindars in Bengal, this objective was met with great success."
- 2) **According to P. E. Roberts :-** "The permanent settlement system provided stability and popularity to the British rule. Helps to make province most prosperous."
- 3) **According to R.C Dutt :-** "The Permanent Settlement of Lord Cornwallis in 1793 was a wise and successful one which contributed to the stability of British rule in India."
- 4) **According to Beveridge :-** "It was a plan based on terrible mistake and injustice, in which only the landlords were compromised while the rights of the peasants were completely neglected."
- 5) **Carver:-** "This system created such a class of absentee landlords which proved to be as fatal to the rural economy as war, famine and epidemic."
- 6) **According to P. E. Roberts :-** " If the Permanent Settlement had been applicable only for ten or twenty years, surely the subsequent (later coming) defects could have been rectified."

॥ प्रश्न :- स्थाई बंदोबस्त एक साहसी एवं बुद्धिमत्ता पूर्ण कदम था। टिप्पणी कीजिये ?

॥ उत्तर :-

- 1) भूमिका - स्थाई बंदोबस्त के उद्देश्य- अधिकतम भू राजस्व की राशि प्राप्त करने के लिए
- 2) साहसी कैसे - पहली बार संपत्ति के अधिकारों को स्पष्ट करते हुए जमींदार बिचौलियों को भूस्वामी बना दिया गया और किसानों को मात्र खेती करने वाले मजदूर । यह एक साहसी कदम था
- 3) बुद्धिमत्तापूर्ण कैसे -
  - ‡ ब्रिटिश को निश्चित व स्थायी आय की प्राप्ति
  - ‡ प्रशासनिक कठिनाइयों से मुक्त
  - ‡ समर्थक जमींदार की प्राप्ति
- 4) बुद्धिमत्ता पूर्ण कदम नहीं था क्योंकि बढ़ती आवश्यकता पूरी नहीं हो पा रही थी जमींदारों के शोषण से किसानों की परेशानियां बढ़ी कृषि का विकास नहीं हुआ
- 5) निष्कर्ष - इस प्रकार यह साहसी कदम तो था परंतु बुद्धिमत्ता पूर्ण कदम नहीं था

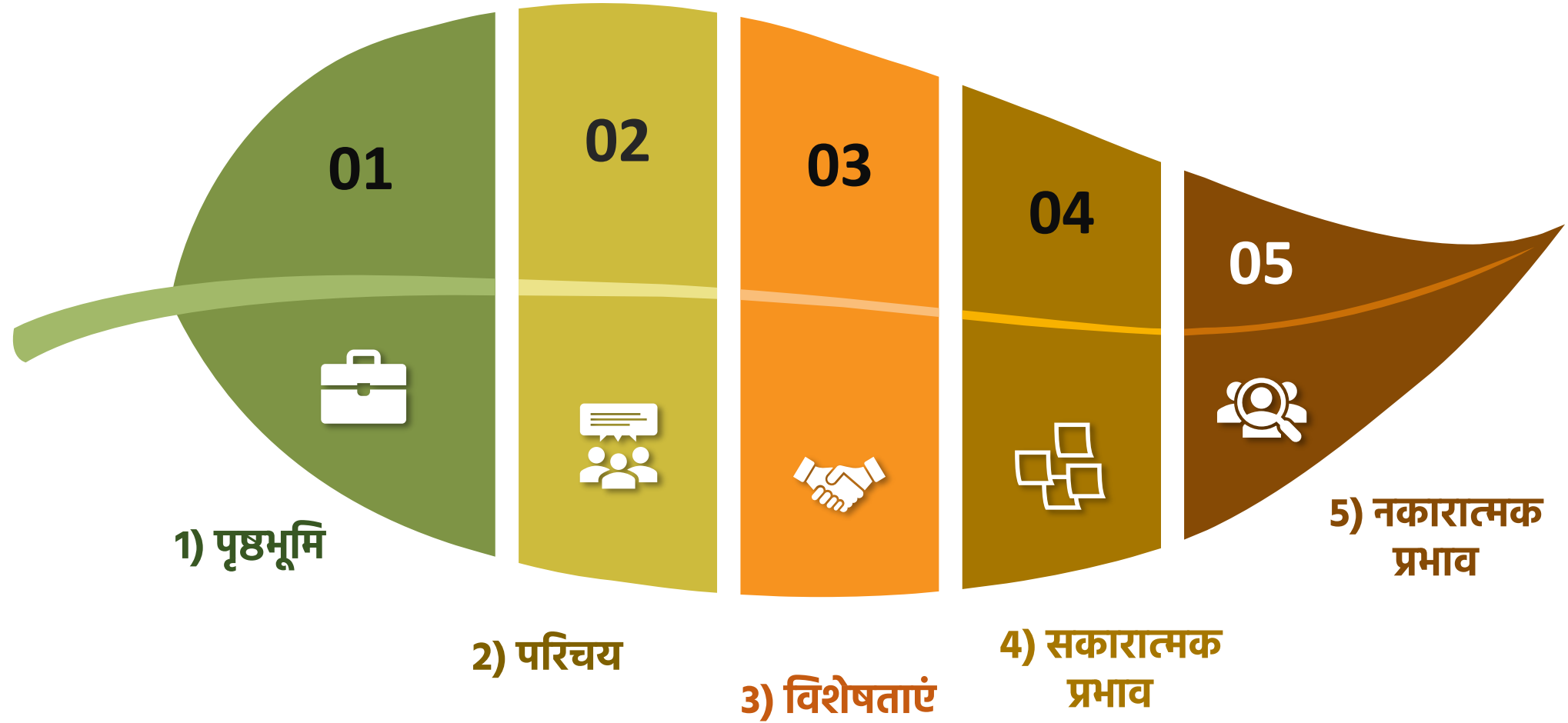


⌞ **Question:- The Permanent Settlement was a courageous and wise move. comment?**

⌞ **Answer :-**

- 1) Introduction - Purpose of Permanent Settlement - To get maximum amount of land revenue
- 2) Courageous - For the first time, by making middleman as landowner and peasants as mere agricultural laborer, by clarifying property rights, it was a brave move
- 3) Intelligent -
  - ⌘ Fixed and permanent income for the British
  - ⌘ free from administrative difficulties
  - ⌘ To get supporter zamindar
  - ⌘ It was not a wise move because the growing need was not being met, the problems of the farmers increased due to the exploitation of the landlords, there was no development of agriculture.
  - ⌘ Conclusion - Thus it was a courageous move but not a wise move.

## 4) रैयतवाड़ी बंदोबस्त || Ryotwari Settlement



## 4) Ryotwari System



## 1) पृष्ठभूमि

- 1) दक्षिण - पश्चिम भारत में जमींदार वर्ग की अनुपस्थिति
- 2) स्थाई बंदोबस्त से ब्रिटेन को अपेक्षा अनुसार राजस्व ना मिलना
- 3) यूरोप में बेंथम, रिकार्डो (मध्यस्थ नहीं), जेम्स मिल की उपयोगितावादी विचारधारा

## 2) परिचय

- 1) **प्रवर्तक :-**
- कर्नल रीड (1792) - बारामहल(मद्रास)
  - थॉमस मुनरो (1820) - संपूर्ण मद्रास
  - एलिफिंस्टन (1823) - बम्बई
  - सुधार - गोल्डस्मिथ, विंगेट

- 2) **क्षेत्र :-** सम्पूर्ण ब्रिटिश भारत के 51% क्षेत्र पर (मद्रास, बम्बई, पूर्वी बंगाल, असम व कुर्ग)

## 3) विशेषताएं

- 1) रैय्यतों (किसानों) को भूस्वामी मानकर, उनसे प्रत्यक्ष भू राजस्व समझौता :-

- रैय्यतों का पंजीकरण
- कृषि भूमि का सर्वेक्षण
- भूमि विक्रय का अधिकार

### 2) भू राजस्व दरें :-

- कुल उत्पादन का 2/5 भाग
- आधार - भूमि का क्षेत्रफल व उत्पादन क्षमता
- पुनः निर्धारण - 20-30 वर्षों के मध्य
- संग्रहक - राजकीय कर्मचारी

- 3) लगान न देने पर भूमि जब्त
- 4) लगान चुकाने हेतु किसान अपनी भूमि **गिरवी** रख सकते थे - महाजनी व्यवस्था द्वारा कृषक शोषण
- 5) बंजर भूमि पर सरकारी स्वामित्व

## 1) Background

- 1) Absence of landlord class in South-West India
- 2) Britain not getting revenue as expected from Permanent Settlement
- 3) Bentham (Europe), Ricardo (not the arbiter), James Mill's utilitarian ideology in Europe

## 2) Introduction

- 1) **Promoter** -
- Captain Read (1792) - Baramahal
  - Thomas Munro (1820) - full Madras
  - Elphinstone (1823) - Bombay
  - Reformation - Goldsmith, Wingate

- 2) **Area :-** On 51% of the whole of British India (Madras, Bombay, East Bengal, Assam and Coorg)

## 3) Characteristics

- 1) Considered ryots (farmers) as landowners, direct land revenue settlement with them :-

- Registration of ryots
- Survey of agricultural land
- Right to sale

### 2) Land revenue rates :-

- 2/5 of the total production
- Base - area of land and production capacity
- Reassessment - Between 20-30 years
- Collector - government servant

- 3) Evicted from land in case of loan default.
- 4) Farmers could mortgage their land to pay the rent - Farmer exploitation by moneylender
- 5) Government ownership on barren land

#### 4) सकारात्मक प्रभाव

- 1) राज्य की आय में वृद्धि
- 2) जमींदारों (बिचौलियों) के शोषण से किसानों को मुक्ति
- 3) सरकार व रैय्यतों के मध्य प्रत्यक्ष सम्बंध - अधिक कृषक स्वतंत्रता
- 4) निजी संपत्ति के लाभ का बेहतर वितरण

#### 5) नकारात्मक प्रभाव

- 1) ज्यादा भू राजस्व दर
- 2) प्राकृतिक आपदा के समय लगान राहत नहीं
- 3) **कृषक ऋणग्रस्तता** - साहूकारों / महाजनों द्वारा कृषक शोषण
- 4) **कृषि निवेश में कमी** - उत्पादकता में कमी

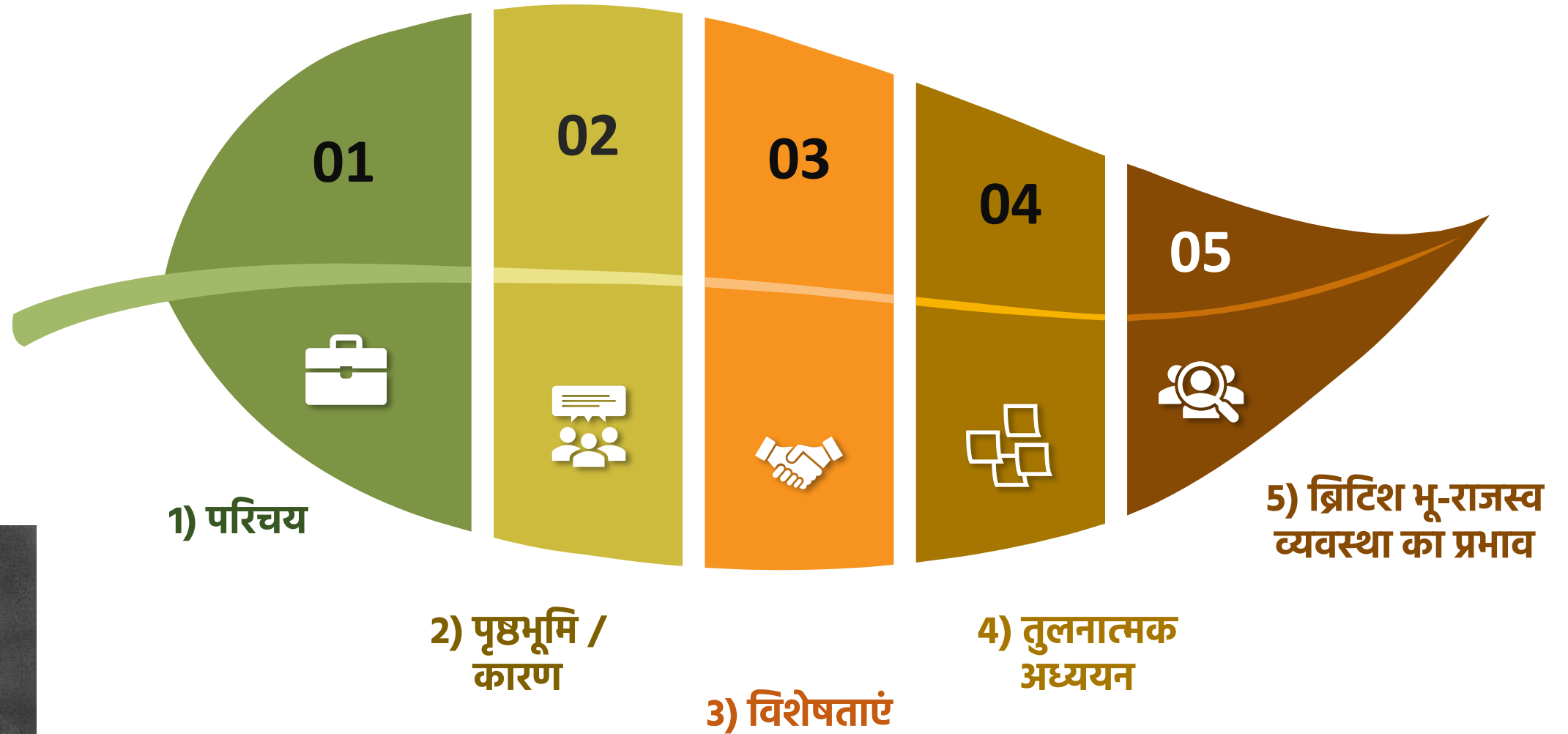
#### 4) Positive Effect

- 1) Increase in british income
- 2) Liberation of farmers from the exploitation of Zamindars (middlemen)
- 3) Direct relationship between the government and the ryots - more peasant independence
- 4) Better distribution of private property profits

#### 5) Negative Effect

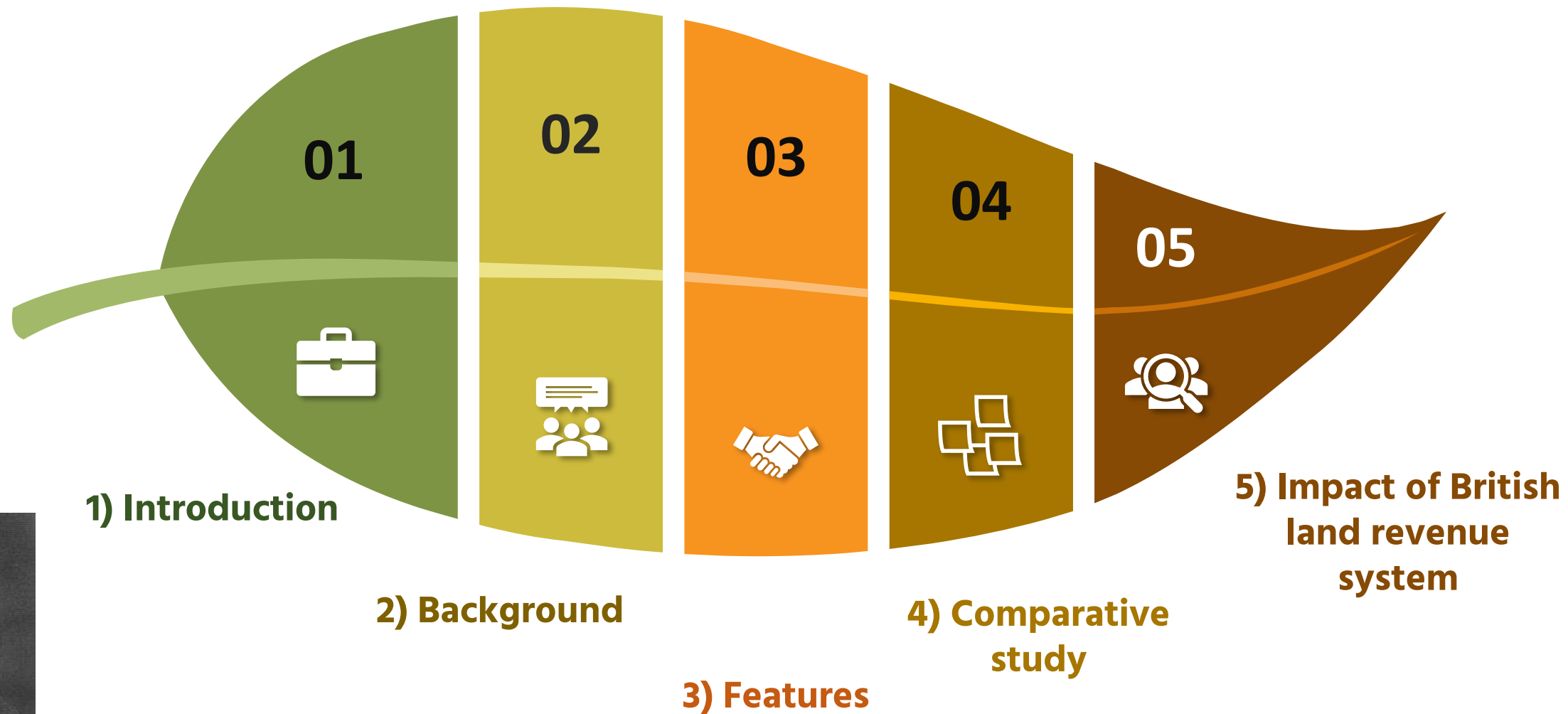
- 1) Higher land revenue rate
- 2) No relief in time of natural calamity
- 3) **Farmer indebtedness** - Farmer exploitation by mahajan / moneylenders
- 4) **Decrease in agricultural investment** – lack in productivity

## 5) महालवाड़ी बंदोबस्त || Mahalwari System






## 5) Mahalwari System



## 1) परिचय

- 1) **आरम्भकर्ता**  1) हॉल्ट मैकेंजी(1822)  
2) सुधार :- मार्टिन बर्ड और जेम्स टॉमसन
- 2) **क्षेत्र :-** ब्रिटिश भारत की 30% भूमि (आगरा, अवध, मध्य प्रांत, पंजाब, उत्तर पश्चिम व दक्षिण भारत के कुछ क्षेत्र)
- 3) भू राजस्व समझौता **महाल (गांव/गांव समूह)** से किया गया

## 2) पृष्ठभूमि / कारण

- 1) सत्तान्तरित (ceded) व नवीन विजित क्षेत्रों में नवीन भू राजस्व व्यवस्था की आवश्यकता
- 2) भौगोलिक व उत्पादकता सम्बंधी विविधताएं
- 3) स्थाई बंदोबस्त से सरकार को अपेक्षाकृत आय न मिलना
- 4) रिकॉर्डों, माल्थस आदि के विचार

## 3) विशेषताएं

- 1) लगान के निर्धारण हेतु **महाल(गांव/गांव समूह)** को इकाई माना
- 2) ब्रिटिश सरकार **गांव के मुखिया से राजस्व वसूलती** थी
- 3) भू राजस्व की दर 66% निश्चित की गई थी जिसे आगे बेंटिक ने 60% तथा डलहौजी ने 50% तक घटा दिया
- 4) ग्राम प्रधान या जमींदार को कृषकों से प्राप्त राजस्व का 83% हिस्सा ब्रिटिश सरकार को देना होता था
- 5) लगान न देने पर किसानों की भूमि ग्राम सभा के अधीन
- 6) लगान निर्धारण हेतु मानचित्रों व पंजियों का प्रयोग

अतः हम कह सकते हैं कि ब्रिटिश भू राजस्व नीति का मुख्य उद्देश्य अत्याधिक भू राजस्व की प्राप्ति करना था जिससे किसानों का अत्यधिक शोषण हुआ और इसकी अभिव्यक्ति किसान एवं जनजाति विद्रोह के रूप में हुई

## 1) Introduction

- 1) **Initiator** 
  - 1) Halt Mackenzie (1822)
  - 2) Reform : Martin Bird & James Tomson
- 2) **Area :-** 30% of British India's land (Agra, Oudh, Central Provinces, Punjab, some areas of Northwest and South India)
- 3) Land revenue settlement made with **Mahal (village/village group)**

## 2) Background / Reason

- 1) Need for new land revenue system in newly conquered areas
- 2) Geographical and Productivity Variations
- 3) The government was not getting expected income from the permanent settlement
- 4) Philosophy of Ricardo, Malthus etc.

## 3) Features

- 1) Unit of land revenue :- **Mahal (village/village group)**
- 2) British government collected **revenue from the head of village.**
- 3) The rate of land revenue was 66%, which was further reduced to 60% by Bentick and 50% by Dalhousie.
- 4) Head of village had to pay 83% of the revenue to the British government.
- 5) If farmer is not able to pay revenue then land was transferred to Gram Sabha.

Therefore, we can say that the main objective of the British land revenue policy was to obtain excessive land revenue, which led to excessive exploitation of the farmers, and it was expressed in the form of peasant and tribal revolt.

#### 4) तुलनात्मक अध्ययन

आधार	स्थायी बंदोबस्त	रैयतवाड़ी	महालवाड़ी
1. प्रवर्तक   Founder	लॉर्ड कार्नवालिस	1. एलेग्जेंडर रीड 2. टॉमस मुनरो 3. एलफिंस्टन	हाल्ट मेकेंजी
2. क्षेत्र   Area	बंगाल, बिहार, उड़ीसा, वाराणसी ,उत्तरी कर्नाटक	मद्रास, मुंबई, असम, पश्चिम भारत, पूर्वी बंगाल	उत्तर प्रदेश, मध्य प्रांत, पंजाब - 30% क्षेत्रफल पर
3. भूमि पर हक	जमींदार	रैय्यत (किसान)	महाल (ग्राम)

#### 5) ब्रिटिश भू-राजस्व व्यवस्था का प्रभाव

भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विस्तार हेतु कंपनी को राजस्व की आवश्यकता थी जिस का मुख्य स्रोत भू राजस्व था अतः सभी भू राजस्व नीतियों का उद्देश्य शोषण था, ब्रिटिश सरकार की भू राजस्व नीतियों(इजारेदारी, स्थायी बंदोबस्त, रैयतवाड़ी, महालवाड़ी) के भारतीय अर्थव्यवस्था पर निम्न प्रभाव हुए -

#### 4) Comparative study

Base	Permanent settlement	Ryotwari	Mahalwadi
1. Founder	Lord Cornwallis	1. Alexander Reid 2. Tomas Monroe 3. Elphinstone	Halt McKenzie
2. Area	Bengal, Bihar, Orissa, Varanasi, North Karnataka (19%)	Madras, Mumbai, Assam, West India, East Bengal (51%)	Uttar Pradesh, Central Provinces, Punjab - on 30% area
3. land title	zamindar	ryot (farmer)	Mahal (Village)

#### 5) Impact of British land revenue system

For the expansion of British imperialism in India, the company needed revenue, whose main source was land revenue, so the purpose of all land revenue policies was exploitation, the British government's land revenue policies (monopoly, permanent settlement, Ryotwari, Mahalwari) on the Indian economy. The following were the effects -

## 6) भू राजस्व व्यवस्था का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

- 1) भूमि क्रय-विक्रय की वस्तु बनी
  - जोतो के आकार में कमी
  - संयुक्त परिवार का विघटन व मुकदमेबाजी
  - किसानों की दुर्दशा
- 2) कृषि निवेश में कमी से उत्पादन में कमी
- 3) कृषक ऋणग्रस्तता
  - रैयतवाड़ी जैसी व्यवस्थाओं द्वारा साहूकारी/मालगुजारी द्वारा शोषण
- 4) कृषि के वाणिज्यीकरण पर जोर देने से अकाल व भुखमरी
- 5) किसान का मजदूर व दास के रूप में रूपांतरण
- 6) विऔद्योगिकरण ➡ बेरोजगारी ➡ कृषि क्षेत्र पर दबाव में बढ़ोत्तरी

## 6) Impact of land revenue system on Indian economy

- 1) Land became a commodity
  - Decrease in size of field
  - Dissolution of joint family and increased litigation
  - Plight of farmers
- 2) Reduction in production due to reduction in agricultural investment
- 3) Farmer indebtedness
  - Exploitation by moneylender/malguzari by systems like ryotwari
- 4) Famine and starvation due to emphasis on commercialization of agriculture
- 5) Conversion of farmer into laborer and slave
- 6) Deindustrialization ➡ Unemployment ➡ Increasing pressure on the agriculture sector

### 3.4) ब्रिटिश कृषि नीतियां व कृषि का वाणिज्यीकरण

#### 1) प्रमुख कृषि सुधार/कार्य

- 1) **1843 :-** अधिक अन्न उपजाओ कार्यक्रम
  - 2) **1850 :-** ब्रिटिश सरकार ने सिंचाई के लिए विभिन्न साधनों का विकास
  - 3) **1876 :-** इंडियन कौंसिल ऑफ साइंटिफिक स्टडीज की स्थापना
  - 4) **1880 :-** एक दुर्भिक्ष आयोग की स्थापना
  - 5) **1889 :-** एक कृषि विशेषज्ञ डॉ वाचेल्कर ने कृषि भारतीय कृषि की अवस्था की जांच पड़ताल की
  - 6) **1905 :-** अखिल भारतीय कृषि बोर्ड की स्थापना की गई
  - 7) **1911 :-** बंगलोर में इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंसेज की स्थापना
  - 8) **1919 :-** मांटैग्यू चेम्सफोर्ड सुधारों के फलस्वरूप कृषि हस्तांतरित विषय बन गया और इसके विकास का उत्तरदायित्व जनता के प्रतिनिधियों पर आ गया
  - 9) **1929 :-** इंपीरियल कौंसिल ऑफ एग्रीकल्चरल रिसर्च सेंटर
  - 10) कृषि के विकास के लिए कम ब्याज पर ऋण देना प्रारंभ किया गया
  - 11) पूना में एक कृषि अनुसंधान तथा कृषि कॉलेज की स्थापना
  - 12) भाखड़ा नांगल दामोदर घाटी आदि की योजनाएं
  - 13) सिंध में सक्कर बैराज और पंजाब में नहरों का निर्माण
- इस प्रकार हम देखते हैं कि ब्रिटिश शासन काल में कृषि क्षेत्र में कुछ प्रगति अवश्य हुई, किंतु कृषक पहले जैसे ही निर्धन रहे



### 3.4) British Agricultural Policies and Commercialization of Agriculture

#### 1) Major Agricultural Reforms/Actions

- 1) **1843 :-** Grow more food program
  - 2) **1850 :-** The British government developed various means for irrigation.
  - 3) **1876 :-** Establishment of Indian Council of Scientific Studies
  - 4) **1880 :-** Establishment of a famine commission
  - 5) **1889 :-** Dr. Wachelkar, an agricultural expert, investigated the state of agriculture in Indian agriculture.
  - 6) **1905 :-** All India Agricultural Board was established
  - 7) **1911 :-** Establishment of Indian Institute of Sciences at Bangalore
  - 8) **1919 :-** As a result of the Montagu-Chelmsford Reforms, agriculture became a transferred subject so it's responsibility fell on the representatives of the people.
  - 9) **1929 :-** Imperial Council of Agricultural Research Center
  - 10) Lending at low interest was started for the development of agriculture.
  - 11) Establishment of an Agricultural Research and Agriculture College at Poona
  - 12) Schemes of Bhakra Nangal Damodar Valley etc.
  - 13) Construction of Sakkhar barrage in Sindh and canals in Punjab
- Thus we see that during the British rule some progress was made in the agricultural sector, but the farmers remained as poor as before.

## 2) ब्रिटिश कृषि नीतियों के प्रभाव

- 1) भूमि का हस्तांतरण की वस्तु बन जाना
- 2) भूमि के बंटवारे से संयुक्त परिवार प्रणाली का पतन
- 3) अत्यधिक मुकदमेबाजी - कृषकों का धन व समय व्यर्थ
- 4) कुटीर उद्योगों का विनाश
- 5) अनुपस्थित जमींदार वर्ग का उदय
- 6) भारतीय कृषकों पर ऋण का बोझ
- 7) व्यावसायिक फसलों पर जोर - खाद्यान्नों का अभाव व अकाल

## 3) कृषि का वाणिज्यीकरण



## 2) Impact of British Agricultural Policies

- 1) Land becoming an object of transfer
- 2) Fall of joint family system due to division of land
- 3) Excessive litigation :- waste of farmers' money and time
- 4) Destruction of cottage industries
- 5) Rise of absentee landlord class
- 6) Debt burden on Indian farmers
- 7) Emphasis on commercial crops - lack of food grains and famine

## 3) Commercialization of Agriculture



### 3.1) परिचय व अर्थ

19 वीं सदी से पूर्व भारतीय कृषि आजीविका आधारित थी, परन्तु इंग्लैंड की औद्योगिक क्रांति व ब्रिटिश औपनिवेशिक आवश्यकताओं ने भारतीय कृषि में मूलभूत परिवर्तन किया जो कृषि का वाणिज्यीकरण था

**1) अर्थ :-** व्यापारिक लाभ के उद्देश्य से खाद्यान्न फसलों के स्थान पर नकदी फसलों के उत्पादन पर बल

**2) नकदी फसलें :-**

‡ चाय - असम

➤ 1835 - प्रथम चाय बागान

➤ 1839 - असम चाय कम्पनी

‡ जूट - बंगाल

‡ अफीम, कपास, नील, कॉफी, रेशम आदि

3) ब्रिटिश पूर्व भारत में नकदी फसलों के उत्पादन का उद्देश्य आत्मनिर्भरता मात्र थी

4) अंग्रेजों की औपनिवेशिक नीतियों के अंतर्गत कृषि के वाणिज्यीकरण ने जहां एक तरफ ब्रिटेन को समृद्ध किया वहीं दूसरी तरफ भारत को दरिद्रता से ग्रस्त कर दिया

### 3.2) उद्देश्य/कारक

**1) भू राजस्व की राशि को पूरा करना** - मद्रास के गवर्नर से किसान ने कहा "हम कपास इसलिए उगाते हैं ताकि इसको खा ना सकें और भू राजस्व की रकम को पूरा कर सकें"

**2) ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति** हेतु कच्चे माल की आपूर्ति

3) चीन के साथ व्यापार संतुलन ब्रिटेन के पक्ष में करने हेतु अफीम एवं चाय का उत्पादन

4) ब्रिटिश खाद्यान्न आवश्यकता

5) अधिकाधिक कृषिगत निर्यात लाभांश की प्राप्ति

6) रेलवे का विकास का भारत का वैश्विक अर्थव्यवस्था से जुड़ाव

## 4.1) Introduction and Meaning

Prior to the 19th century, Indian agriculture was livelihood based, but Industrial Revolution of England & British colonial needs brought about a fundamental change in Indian agriculture, which was the commercialization of agriculture.

**1) Meaning :-** Emphasis on production of cash crops instead of food crops for maximum commercial profit

**2) Cash crops :-**

‡ Tea - Assam

➤ 1835 - First tea garden

➤ 1839 - Assam Tea Company

‡ Jute - Bengal

‡ Opium, cotton, indigo, coffee, silk etc.

3) In pre-British India, the objective of production of cash crops was self-reliance only.

5) The commercialization of agriculture made Britain prosperous and on the other hand India was plagued by poverty.

## 4.2) Objectives/Factors

- 1) **To meet the amount of land revenue** - Governor of Madras said "We grow cotton so that we can not eat it and can meet the amount of land revenue"
- 2) Supply of Raw Materials for the **Industrial Revolution in Britain**
- 3) Production of opium and tea to shift trade balance with China in favor of Britain
- 4) British food requirement
- 5) To attain maximum agricultural export dividend
- 6) India's linkage to the global economy with the development of railways

### 3.3) प्रक्रिया

- 1) नगदी फसलों जैसे कपास, नील, जूट, तंबाकू, चाय, अफीम आदि की खेती पर बल
- 2) 1773 में वारेन हेस्टिंग्स ने पहली बार अफीम की खेती को कंपनी के एकाधिकार में लाया और अफीम का निर्यात चीन किया गया
- 3) पूर्वी भारत में असम में चाय की खेती आरंभ की गई और पहला चाय बागान असम में 1835 में लगाया गया
- 4) चाय बागान में मुख्यतः ब्रिटिश पूंजी लगी हुई थी और इसमें कार्य करने के लिए बंधुआ मजदूरों को रखा गया
- 5) इंग्लैंड में ब्रिटिश सरकार ने भारत से आयात किए जाने वाले कच्चे माल एवं खाद्यान्न पर नाम मात्र का आयात शुल्क रखा

### भारत में सर्वप्रथम उद्योगों की स्थापना

उद्योग	स्थापना वर्ष	स्थान
सूती वस्त्र	1818	फोर्ट ग्लोस्टर असफल(कोलकाता)
सूती वस्त्र	1853	बम्बई(सफल)
कागज	1832	सिरामपुर(पं बंगाल)
चीनी उद्योग	1840	बेतिया(बिहार)
सीमेंट	1904	चेन्नई
जूट	1855(ncert)	रिशरा(पं बंगाल)
लोहा इस्पात	1870	कुल्टी(पं बंगाल)
ऊनी वस्त्र	1876	कानपुर
कृत्रिम रेशा रेयान	1920	त्रावणकोर(केरल)
एल्युमिनियम	1937	जे के नगर(पं बंगाल)

### 3.3) Process

- 1) Emphasis on cultivation of cash crops like cotton, indigo, jute, tobacco, tea, opium etc.
- 2) In 1773, Warren Hastings brought opium cultivation under the Company's monopoly for the first time and opium was exported to China.
- 3) In eastern India, tea cultivation was introduced in Assam and the first tea garden was established in Assam in 1835.
- 4) British capital was mainly engaged in the tea garden and bonded laborers were hired to work in it.
- 5) In England, the British government placed a nominal import duty on raw materials and food grains imported from India.

### Establishment of first industries in India

Industry	Year	Place
Cotton clothes	1818	Fort Gloster Fail (Kolkata)
Cotton clothes	1853	Bombay (successful)
Paper	1832	Sirampur (West Bengal)
Sugar industry	1840	Bettiah (Bihar)
Cement	1904	Chennai
Jute	1855(ncert)	Rinsara (West Bengal)
Iron steel	1870	Kulti (West Bengal)
Woolen clothes	1876	Kanpur
Synthetic fiber rayon	1920	Travancore (Kerala)
Aluminum	1937	J.K. Nagar (West Bengal)

### 3.4) प्रभाव

#### -: सकारात्मक :-

- भारतीय अर्थव्यवस्था का वैश्वीकरण
- ग्रामीण-शहरी संपर्क से राष्ट्रीय चेतना का विकास
- कृषि का पूंजीवादी रूपांतरण
- कृषि विशेषीकरण, नवाचार व तकनीकीकरण को बढ़ावा

#### -: नकारात्मक प्रभाव :-

- धन की तीव्रता से निकासी
- विऔद्योगीकरण को बढ़ावा
- ग्रामीण ऋणग्रस्तता, भुखमरी, बेरोजगारी आदि में वृद्धि
- मानवजनित अकालों (बंगाल का अकाल, उड़ीसा का अकाल) आदि की संख्या में वृद्धि
- व्यवसायिक कृषि ने आर्थिक असमानता को बढ़ावा

कृषि का वाणिज्यीकरण ब्रिटिश औपनिवेशिक हितों से परिचालित था फलतः इसका लाभ मुख्यतः इंग्लैंड व अंग्रेजों को मिला भारतीयों का इसमें अत्यधिक शोषण हुआ और भारतीय कृषि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा



### 3.4) Effects

```
graph TD; A[3.4) Effects] --> B[-: Positive :-]; A --> C[-: Negative impact :-];
```

#### **-: Positive :-**

- Globalization of Indian Economy
- Development of national consciousness through rural-urban connectivity
- Capitalist transformation of agriculture
- Promotion of agricultural specialization, innovation and technology

#### **-: Negative impact :-**

- Drain of wealth
- Deindustrialization in India
- Increase in rural indebtedness, hunger, unemployment etc.
- Increase in the number of anthropogenic famines (Famine of Bengal, Famine of Orissa)
- Increase in economic inequality

The commercialization of agriculture was driven by British colonial interests, as a result of this, mainly England and British got the benefit of it, Indians were highly exploited in it and there was a negative effect on Indian agriculture.

### 3.5) प्रमुख तथ्य

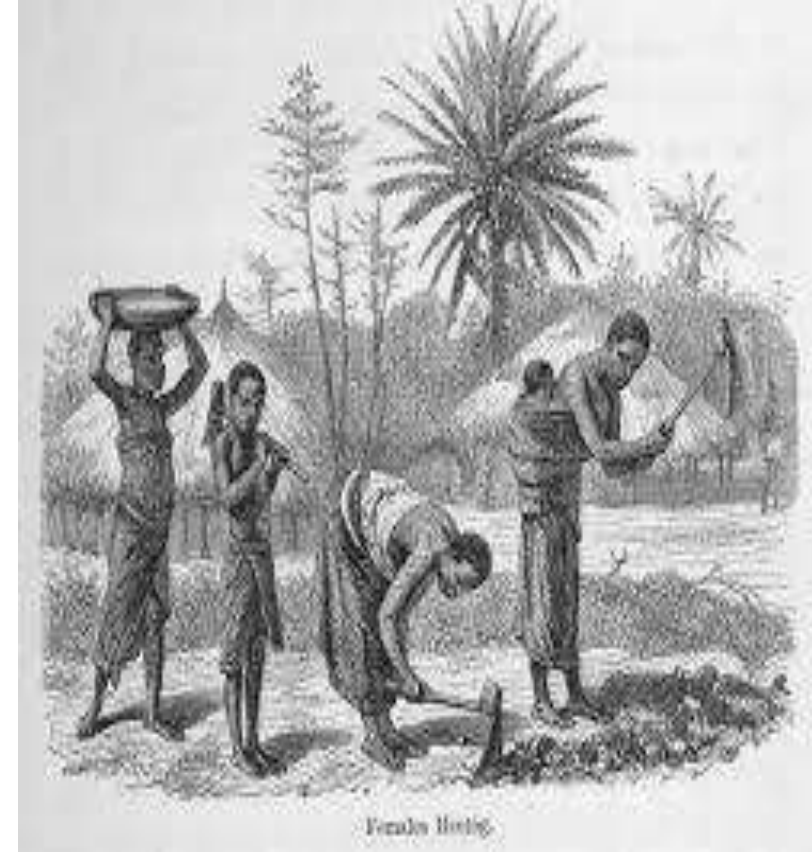
- 1) चाय व कॉफी के बागान पूर्ण रूप से विदेशी पूंजी के नियंत्रण में थे किसी भारतीय का इनके उत्पादन में कोई हाथ नहीं होता था
- 2) चाय की फसल उगाने पर विशेष बल दिया गया ताकि ब्रिटेन को चाय के लिए चीन पर निर्भर न रहना पड़े
- 3) नील की खेती और उसके द्वारा कृषकों के शोषण की कहानी को नील दर्पण में प्रमुखता से दर्शाया गया
- 4) 1928 में कृषि पर शाही आयोग बनाया गया जिसने इस दासता को अपनी रिपोर्ट में दर्शाया है
- 5) बिहार और उड़ीसा में कमियोटी नाम की प्रथा प्रचलित थी कमिया लोग अपने मालिक के बंधुआ नौकर थे
- 6) कृषि के व्यवसायीकरण का एक परिणाम बंधुआ मजदूरी के रूप में तो दूसरा अकाल के रूप में सामने आया
- 7) तमिलनाडु में पन्नियाल तथा गुजरात में हाली समूह के मजदूर कृषि दास होते थे 1920 में कमियोटी को रोकने के लिए कानून बनाया गया, परन्तु व्यवहार में यह प्रथा बहुत बाद तक चलती रही
- 8) नकदी फसलों के लालच में खाद्यान्न उत्पादन न होने से 1866-67 ई में भयंकर अकाल पड़े इन्हें आपदा का महासागर कहा गया
- 9) डेनियल थार्नर ने 1890-1947 तक के काल को कृषि स्थिरता का काल बताया है
- 10) ब्रिटिश भू राजस्व नीति और कृषि नीति ने भारत में गरीबी बढ़ाई, अकाल पड़े, कुछ हद तक अर्थव्यवस्था का मौद्रीकरण हुआ तथा गावों की अर्थव्यवस्था ध्वस्त होने से मजदूरी के लिए शहर की ओर पलायन हुआ फलतः नए शोषण पूर्ण श्रम सम्बंधों की शुरुआत हुई

### 3.5) Key Facts

- 1) Tea and coffee plantations were completely under the control of foreign capital, no Indian had any hand in their production.
- 2) Special emphasis was given on growing the tea crop so that Britain does not have to depend on China for tea.
- 3) The story of indigo cultivation and its exploitation of farmers was prominently depicted in Neel Darpan.
- 4) In 1928, the royal commission on agriculture was created, which has shown this slavery in its report.
- 5) In Bihar and Orissa the practice of Kamiyati was prevalent. The Kamiya people were bonded servants of their masters.
- 6) One result of the commercialization of agriculture came in the form of bonded labor and the other in the form of famine.
- 7) The Panniyals in Tamil Nadu and the Hali groups in Gujarat used to be agricultural slaves. In 1920, a law was enacted to prevent the commission, but in practice this practice continued until much later.
- 8) Due to the lack of food grains production in the greed of cash crops, there was a severe famine in 1866-67, it was called the ocean of disaster.
- 9) Daniel Tharner has described the period from 1890-1947 as a period of agricultural stability.
- 10) The British land revenue policy and agricultural policy increased poverty in India, caused famines, monetized the economy to some extent, and the collapse of the village economy led to migration to the city for wages, resulting in the beginning of new exploitative labor relations

### 3.6) शोषणकारी प्रथाएं

- 1) तिनकठिया प्रथा :-** इस प्रथा के अंतर्गत चंपारण (बिहार) के किसानों को अपने ब्रिटिश वागान मालिकों के साथ किये गए अनुबंध पर अपनी जमीन के करीब 3/20 वें भाग पर नील की खेती करना आवश्यक होता था
- 2) ददनी प्रथा :-** इस प्रथा के अनुसार कंपनी के कर्मचारी जुलाहों को पेशगी (रुपए) देते थे और बदले में एक शर्तनामा लिखवा लेते थे कि वे एक निश्चित मात्रा में और निश्चित मूल्य पर कपड़ा उपलब्ध कराएंगे इस तरह अंग्रेजों के अत्याचारों से तंग आकर जुलाहों के हजारों परिवारों ने अपना पैसा छोड़ दिया और मजदूरी करना प्रारंभ कर दिया।
- 3) कमियौटी प्रथा :-** बिहार एवं उड़ीसा में प्रचलित इस प्रथा के अन्तर्गत कृषि दास के रूप में खेती करने वाले कमियाँ जाति के लोग अपने मालिकों द्वारा प्राप्त ऋण पर दी जाने वाली ब्याज की राशि के बदले में जीवन भर उनकी सेवा करते थे।
- 4) दुबला हाली प्रथा :-** भारत के पश्चिमी क्षेत्र, मुख्यतः सूरत में प्रचलित इस प्रथा के अंतर्गत दुबला हाली नामक भूदास अपने मालिकों को ही अपनी संपत्ति और स्वयं का संरक्षक मानते थे



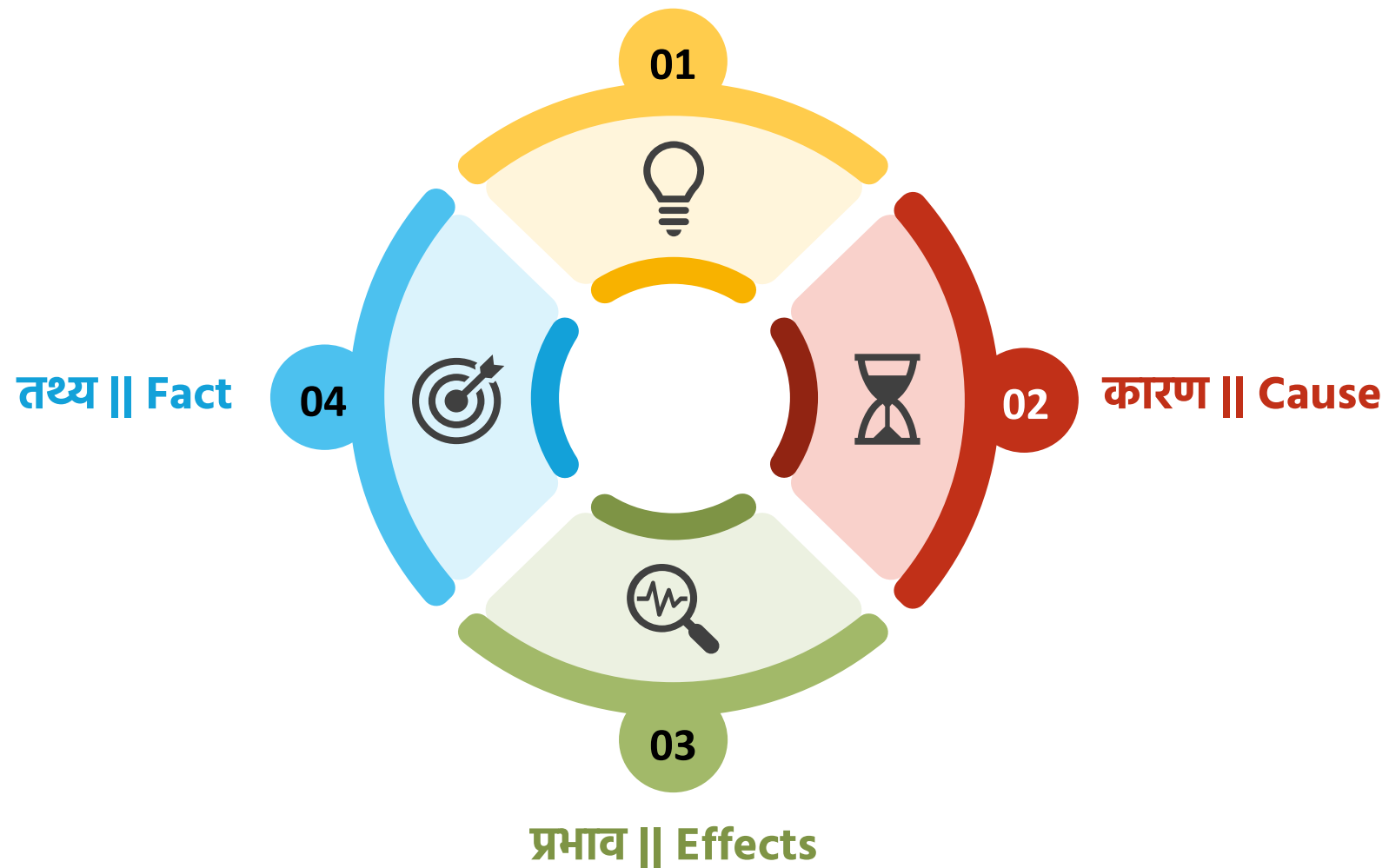
### 3.6) Exploitative practices

- 1) **Tinkathia System :-** Tinkathia system was the system under which the native farmers of Champaran in Bihar were forced to cultivate Indigo in 3 parts of the land out of every 20 parts of the land.
- 2) **Dadni system :-** According to this custom, the employees of the company used to give advance (rupees) to the weavers and in return got a conditional written that they would provide cloth in a certain quantity and at a fixed price, thus fed up with the atrocities of the British, the weavers gave up their jobs.
- 3) **Kamiyauti system :-** Under this practice prevalent in Bihar and Orissa, the people of Kamiya caste, who used to serve them for life in return for interest given on the loan taken from their owners.
- 4) **Dubla Hali custom :-** Hali system was related to the bonded labour system in the western region of India. A Haliya is an agricultural bonded laborer who works on another person's land.

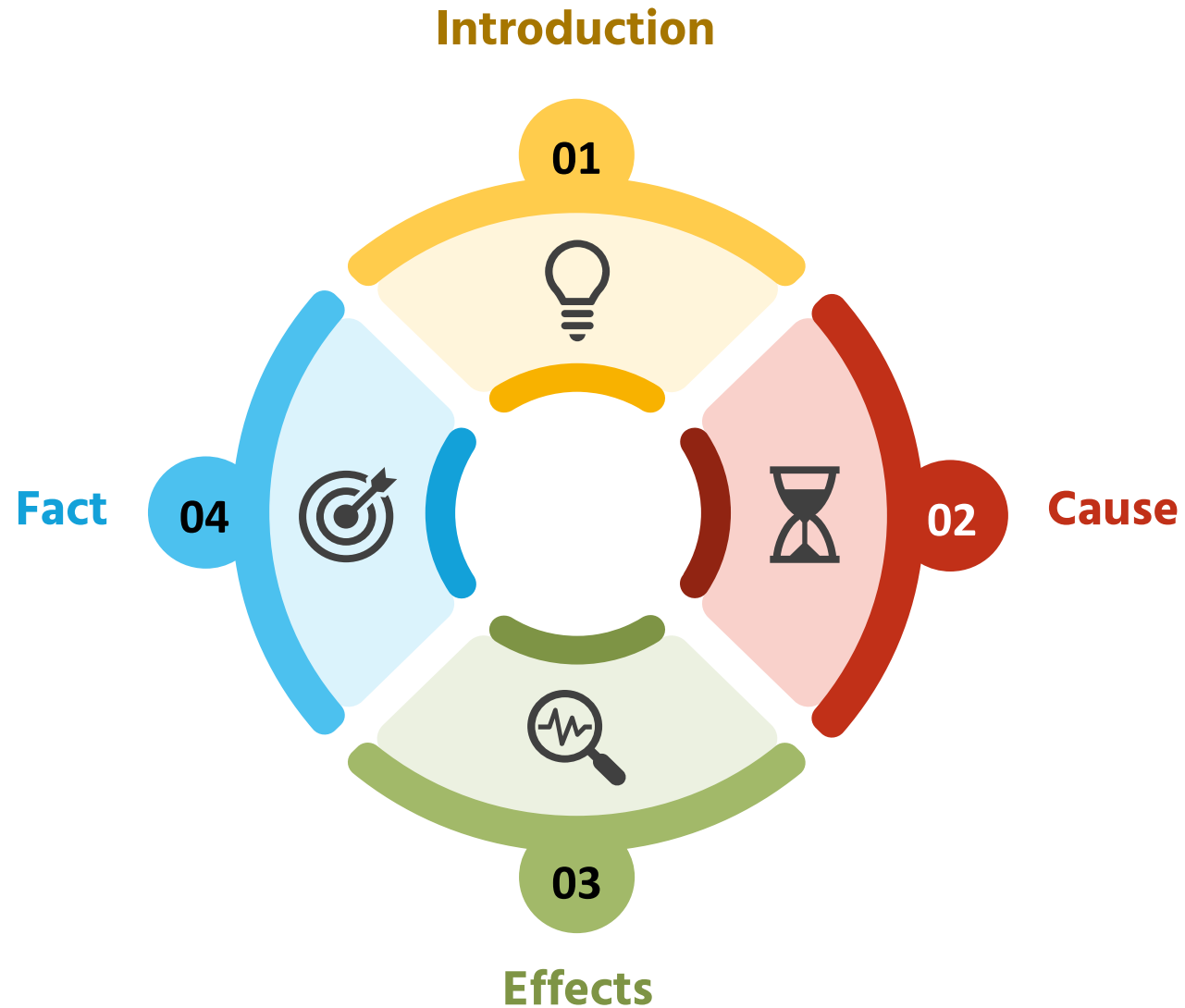


### 3.5) विऔद्योगिकरण व कुटीर उद्योग

परिचय || Introduction



## 3.5) Deindustrialization and Cottage Industry



## 5.1) परिचय

ब्रिटिश सत्ता तथा औपनिवेशिक प्रकृति का प्रभाव भारतीय हस्तशिल्प उद्योगों पर विऔद्योगिकरण के रूप में हुआ

- 1) **अर्थ :-** किसी देश के परंपरागत उद्योगों का क्रमागत विघटन तथा नवीन उद्योगों की स्थापना का अभाव
- 2) सर्वप्रथम दादा भाई नौरोजी ने भारतीय विऔद्योगिकरण का सिद्धांत दिया
- 3) ब्रिटिश शासन से पूर्व भारतीय हस्तकला उद्योग विश्व प्रसिद्ध



**रॉबिन्सन क्रूसो** - " भारतीय कपड़ा हमारे घरों, अलमारियों और शयनकक्ष तक में घुस गया है"

- ढाका का मलमल,
- लाहौर के गलीचे,
- कश्मीर की शाल,
- बनारस का जरी का काम,
- अहमदाबाद की धोतियां,
- लखनऊ का चिकन-बार्डर
- नागपुर का सिल्क उद्योग
- मुरादाबाद पीतल
- शीशे का उद्योग कोल्हापुर, सतारा, गोरखपुर, आगरा और बालाघाट
- वस्त्र उद्योग के अतिरिक्त जहाज निर्माण उद्योग, चमड़ा उद्योग और संगमरमर पत्थर, हाथी दांत, लकड़ी व चंदन की तराशी व नक्काशी भी विश्व प्रसिद्ध था,



## 5.1) Introduction

The impact of British rule and colonial nature on Indian handicraft industries was deindustrialization of India

- 1) **Meaning :-** Gradual collapse of traditional industries of a country and lack of establishment of new industries
- 2) Dadabhai Naoroji gave the theory of Indian deindustrialization.
- 3) Indian handicraft industry was world famous before British rule



**Robinson Crusoe** - " Indian textiles have penetrated into our homes, cabinets and even bedrooms. "

- **Dhaka muslin,**
- **Lahore rugs,**
- **Kashmir shawl,**
- **Banaras zari work,**
- **Dhotis of ahmedabad,**
- **Chicken border of lucknow**
- **Silk industry of nagpur**
- **Moradabad brass**
- **Glass industry kolhapur, satara, gorakhpur, agra and balaghat**
- Apart from the textile industry, the shipbuilding industry, leather industry and carving and carving of marble stone, ivory, wood and sandalwood were also world famous.

## 5.2) कारण

- 1) 1813 के चार्टर अधिनियम द्वारा मुक्त व्यापार नीति
- 2) हस्तशिल्प उद्योगों के संरक्षक व मुख्य क्रेता देशी रजवाड़ों की समाप्ति
- 3) ब्रिटेन द्वारा भारतीय उत्पादों पर प्रतिबंध व विभेदकारी कर
  - ≠ 1820 - ब्रिटेन में भारतीय वस्तुओं पर प्रतिबंध
  - ≠ ब्रिटिश उत्पादों पर 2.5% जबकि भारतीय उत्पादों पर 15% तक कर
  - ≠ 1877 में ब्रिटेन निर्मित कपड़ों पर आयात शुल्क समाप्ति
  - ≠ **बर्नियर** - बंगाल में धन के आने के 100 दरवाजे हैं परंतु बाहर जाने के लिए एक भी नहीं है
- 4) ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति के उत्पादों हेतु भारत का बाजार रुपी प्रयोग
- 5) भारत में यातायात के साधनों का विकास

- 6) ददनी जैसी प्रथाओं द्वारा भारतीय शिल्पकारों का शोषण
- 7) अंग्रेजी शिक्षा व फैशन का अनुकरण

### 8) अन्य कारण :-

- ≠ कच्चे माल की खपत की कोई उचित व्यवस्था ना होना,
- ≠ उद्योगों का संगठित व व्यवस्थित ना होना,
- ≠ भारतीयों में राष्ट्रीय भावना की कमी होना,
- ≠ आधुनिक मशीनों द्वारा सस्ता माल तैयार करना,

इस काल में सभी प्रकार के हस्तशिल्प उद्योगों का पतन नहीं हुआ। इसके निम्नलिखित कारण थे:

- ≠ भारत में कुछ हस्तशिल्प उत्पाद ऐसे थे जिनका विकल्प ब्रिटिश उत्पादन हो ही नहीं सकते थे। उदाहरण - बड़ईगिरी, कुंभकारी,
- ≠ उस काल में भारतीय बाज़ार एकीकृत नहीं था, अतः कुछ क्षेत्रों में चाहकर भी ब्रिटिश उत्पाद नहीं पहुँच सके।

## 5.2) Cause

- 1) Free Trade Policy by Charter Act of 1813
- 2) Decline of princely states - patron of handicraft industries
- 3) Restrictions and discriminatory tax on Indian products
  - ≠ 1820 - Ban on Indian goods in Britain
  - ≠ Tax on British products up to 2.5% while on Indian products up to 15%
  - ≠ The abolition of import duties on British-made clothing in 1877
  - ≠ Bernier - There are 100 doors for money to enter Bengal but none to go out
- 4) India's use as a market for the products of the Industrial Revolution in Britain
- 5) Development of means of transport in India
- 6) English education and fashion simulation

7) Exploitation of Indian craftsmen by practices like Dadni

### 8) Other reason :-

- ≠ No proper arrangement for raw materials,
- ≠ Unorganized industries,
- ≠ Lack of national spirit among Indians,
- ≠ Production of novelties by modern machines,

All types of handicraft industries did not decline during this period. This was due to the following reasons :

- ≠ There were some handicraft products in India which could not be substituted for British production. Example - Carpentry, Pottery
- ≠ At that time the Indian market was not integrated, so British products could not reach in some areas even if they wanted to.

## NOTE

- 1) रेलों के विकास से गांवों में ब्रिटिश कारखाना में निर्मित माल आसानी से एवं सस्ते दामों पर उपलब्ध होने लगा
- 2) 1813 का चार्टर एक्ट - मुक्त व्यापार की नीति तथा शून्य आयात शुल्क
- 3) इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति – भारतीय हस्तशिल्प अंग्रेजों के सस्ते एवं मशीन से निर्मित माल का मुकाबला नहीं कर पाए
- 4) शिल्पकारों को कम दरों पर काम करने तथा अपने उत्पाद अत्यंत कम मूल्यों पर बेचने हेतु विवश किया
- 5) **लॉर्ड विलियम बेंटिक** - भारतीय बुनकरों की हड्डियां भारत की मैदानों पर बिखरी पड़ी हैं
- 6) अंग्रेजों की देशी राज्यों के विलय की नीति ने भी भारतीय हस्तशिल्प उद्योग के पतन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई
- 7) ब्रिटिश शिक्षा नीति का उद्देश्य एक ऐसा वर्ग तैयार करना था जो जन्म से भारतीय हो किंतु अपने आचार विचार एवं व्यवहार से ब्रिटिश हो ताकि ब्रिटिश औद्योगिक बाजार का भारत में विस्तार हो सके
- 8) अंग्रेजी भाषा व फैशन का अनुसरण
- 9) अंग्रेजों ने समाज सुधार के माध्यम से भी अपने आर्थिक हितों की पूर्ति की
- 10) अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम से ईसाई धर्म का प्रचार करना तथा ब्रिटिश उदारवादी और उपयोगितावादी विचारों को फैलाना

## NOTE

- 1) With the development of railways, goods manufactured in British factories were easily and cheaply available in the villages.
- 2) Charter Act of 1813 - Policy of Free Trade and Zero Import Duty
- 3) Industrial Revolution in England - Indian handicrafts could not compete with the cheap and machine made goods of the British
- 4) Craftsmen were forced to work at low rates and sell their products at very low prices.
- 5) **Lord William Bentinck** - Bones of Indian weavers are scattered on the plains of India
- 6) The policy of merger of the native states of the British also played an important role in the decline of the Indian handicrafts industry.
- 7) The objective of the British education policy was to create a class that was Indian by birth but British in its ethics and behavior so that the British industrial market could expand in India.
- 8) following the English language and fashion
- 9) The British also fulfilled their economic interests through social reforms.
- 10) Propagating Christianity through English education and spreading British liberal and utilitarian ideas

## 5.3) प्रभाव

### सकारात्मक प्रभाव

- 1) भारत में आधुनिक उद्योगों के विकास का आधार तैयार किया
- 2) हस्तशिल्पी वर्ग में विद्रोह की भावना का प्रसार हुआ

### नकारात्मक प्रभाव

- 1) नवीन उद्योगों की स्थापना का अभाव
- 2) भारत में शिल्पकारों की बेरोजगारी
- 3) ग्रामों की ओर पलायन
- 4) कृषि पर दबाव व अकाल
- 5) भारतीय आय में कमी - 1800 में वैश्विक अर्थव्यवस्था में 19.6% का योगदान जो 1913 में घटकर 1.4% हो गया
- 6) भारतीय औद्योगिकीकरण का मार्ग अवरुद्ध होना
- 7) ग्रामीण समाज का हास

5) हस्तशिल्प केंद्र क्व रूप में विकसित शहरों, जैसे - ढाका, मुर्शिदाबाद, सूरत आदि का पतन हो गया

6) मानवजनित अकाल, गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, ऋणग्रस्तता आदि में वृद्धि हुई जिससे कानून व्यवस्था चरमरा गई निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है की कंपनी तथा ब्रिटिश पूंजीपतियों ने मिलकर भारतीय हस्तशिल्प उद्योग को पूर्णतः नष्ट कर दिया करघा और चरखा जो पुराने भारतीय समाज की धुरी के रूप में प्रसिद्ध थे को तोड़ डाला तथा भारतीय बाजारों को लंकाशायर और मैनचेस्टर में निर्मित कपड़ों से भर दिया

## 5.3) Effects

### Positive Effects

- 1) Foundation of modern industries in India
- 2) The spirit of rebellion spread among the handicraftsmen

### Negative Effects

- 1) Lack of setting up of new industries
- 2) Unemployment of craftsmen in India
- 3) Migration to villages - Agriculture pressure - Famine
- 4) Decline in Indian income - 19.6% contribution to global economy in 1800 which decreased to 1.4% in 1913
- 5) Decline of rural society
- 6) Handicraft centers & cities like Dhaka, Murshidabad, Surat etc. declined.

- 7) An increase in anthropogenic famine, poverty, hunger, unemployment, indebtedness, etc.,

In conclusion, it can be said that the company and the British capitalists together destroyed the Indian handicraft industry, broke the loom and the spinning wheel which were famous as the pivot of the old Indian society, and the Indian market filled up with cloth manufactured in Lancashire and Manchester.

## 5.4) प्रमुख तथ्य

- 1) सूती कपड़ों पर आयात कर लार्ड लिटन द्वारा घटाया गया था
- 2) भारतीय इतिहास का सबसे भयंकर अकाल 1876-78 में मद्रास, मैसूर, हैदराबाद, महाराष्ट्र संयुक्त प्रांत(पंजाब) में पड़ा
- 3) विलियम बैंटिक ने कहा इस दुर्दशा का भारतीय इतिहास में जोर नहीं भारतीय बुनकरों की हड्डियां भारत के मैदानों में बिखरी पड़ी हैं
- 4) इंपीरियल प्रेफसेस शब्द का प्रयोग भारत में ब्रिटिश आयातों पर दी गई विशेष रियायतों के लिए किया जाता है
- 5) भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने अपने साहित्य में धन निकासी सिद्धांत का उल्लेख किया है
- 6) 1861-62 में भारत से कपास निर्यात बढ़ने का कारण अमेरिका का गृह युद्ध था
- 7) 1800-50 को ब्रिटिश काल में अनुद्योगिकरण कालखंड के रूप में जाना जाता है
- 8) ब्रिटिश काल में भारत की अनुद्योगिकरण से आशय भारतीय परंपरागत हस्तशिल्प एवं लघु उद्योगों के पतन का था
- 9) 1890 से 1947 तक कृषि स्थिरता का काल था
- 10) 1928 में कृषि क्षेत्र के लिए शाही आयोग का गठन किया गया



## 5.4) Key facts

- 1) Import tax on cotton cloth was reduced by Lord Lytton
- 2) The worst famine in Indian history occurred in Madras, Mysore, Hyderabad, Maharashtra United Provinces (Punjab) in 1876-78.
- 3) William Bentinck said that this plight is not emphasized in Indian history, the bones of Indian weavers are scattered in the plains of India.
- 4) The term Imperial Prefects is used to refer to special concessions granted on British imports into India.
- 5) Bhartendu Harishchandra has mentioned the money withdrawal theory in his literature
- 6) The reason for the increase in cotton exports from India in 1861-62 was the American Civil War.
- 7) 1800-50 is known as industrialization period in British period
- 8) Industrialization of India during the British period meant the decline of Indian traditional handicrafts and small-scale industries.
- 9) From 1890 to 1947 there was a period of agrarian stagnation.
- 10) In 1928, the royal commission for the agricultural sector was set up

## 4.6) आधुनिक उद्योगों का विकास

भारतीय पूंजी



सूती वस्त्र व लौह उद्योग

ब्रिटिश पूंजी



रेल्वे, चाय, जूट

### 1) परिचय

ब्रिटिश शासनकाल के दौरान भारत का औद्योगीकरण विकास नहीं, अपितु औपनिवेशिक हितों की पूर्ति हेतु किया गया, भारतीय औद्योगिक विकास को निम्न दो चरणों में विभक्त कर सकते हैं :-

- ‡ **प्रथम विश्व युद्ध के पूर्व (1850-1914)** - भारतीयों द्वारा छूटों व सहायता की मांग
- ‡ **दो विश्व युद्ध के मध्य का काल (1914-1945)** - भारतीय उद्योगों का विकास



## 4.6) development of modern industries

Indian capital



Cotton textile and iron industry

British capital



Railway, tea, jute

### 1) Introduction

The industrialization of India during the British rule was not done for development, but for the fulfillment of colonial interests, Indian industrial development can be divided into the following two phases :-

- ≠ **Before World War I (1850-1914)** - Demands for concessions and aid by Indians
- ≠ **The period between the two world wars (1914-1945)** - development of Indian industries



## प्रथम चरण (1850 से 1914)

- 1) इस चरण में अधिकतम उद्योगों (जूट, बागानी, रेल्वे) में ब्रिटिश पूंजी पर आधारित थे फिर भी **कवास डावर** जैसे साहसी भारतीयों ने सूती वस्त्र जैसे उद्योगों को आरंभ किया
- 2) उद्योग के महत्वपूर्ण क्षेत्र जैसे रेल, परिवहन, बागान बैंक आदि ब्रिटिश पूंजी के नियंत्रण में ही रहें
- 3) महादेव गोविंद रानाडे ने देश में उद्योगों की स्थापना के लिए लोगों का आह्वान किया
- 4) भारतीय उद्योग में सूती वस्त्र पहला उद्योग था जिसमें भारतीयों द्वारा पूंजी लगाई गई
- 5) भारत में आधुनिक स्तर की प्रथम सूती कपड़ा मिल 1818 में कोलकाता के निकट फोर्ट ग्लोस्टर में लगाई गई थी किंतु यह मिल सफल ना हुई

## द्वितीय चरण (1914-1945)

- 1) प्रथम विश्व युद्ध में राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग ने ब्रिटिश का सहयोग
- 2) 1916 में होलैंड कमीशन - भारतीय उद्योगों को संरक्षण
- 3) 1921 में इब्राहिम रहीम के नेतृत्व में वित्तीय आयोग - ब्रिटिश सरकार से भारतीय उद्योगों को सहायता देने की सिफारिश की
- 4) द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान युद्ध कालीन आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु देसी उद्योगों के विकास को प्रोत्साहन मिला भारतीय उद्योगों को विकसित होने का अवसर मिला
- 6) युद्ध के दौरान ही भारतीय पूंजीपतियों ने राष्ट्रीय आंदोलन की परिपक्व अवस्था के दौरान एक बॉम्बे योजना (घनश्याम दास बिरला, जॉन मथाई आदि) प्रस्तुत की
- 7) भारत की पंचवर्षीय योजनाओं के अंतर्गत बॉम्बे योजना के प्रावधान को शामिल किया गया

## Phase I (1850 to 1914)

- 1) In this phase most of the industries (jute, plantation, railways) were based on British capital, yet courageous Indians like **Kawas Davar** started industries like cotton textiles.
- 2) Important sectors of industry such as rail, transport, tea, banks, etc. should remain under the control of British capital.
- 3) Mahadev Govind Ranade appalled people to establish industries in the country
- 4) Cotton textile was the first industry in Indian industry in which capital was invested by Indians.
- 5) The first modern cotton textile mill in India was established in 1818 at Fort Gloster near Kolkata, but this mill failed.

## Phase II (1914–1945)

- 1) The national bourgeoisie supported the British in the First World War
- 2) Holland Commission in 1916 - Protection of Indian Industries
- 3) In 1921, the Financial Commission under the leadership of Ibrahim Rahim - recommended to the British Government to give assistance to Indian industries.
- 4) During the Second World War, the development of indigenous industries was encouraged to meet the wartime needs, Indian industries got an opportunity to develop
- 5) It was during the war that the Indian capitalists presented a Bombay plan (Ghanshyam Das Birla, John Mathai etc.) during the maturing stage of the national movement.
- 6) The provision of Bombay plan was included in the five-year plans of India.

## 2) आधुनिक उद्योगों के सीमित विकास का कारण

- 1) **भारत में पूंजी का अभाव :-** बड़ी मात्रा में धन की निकासी
- 2) उद्योगों को सरकार का संरक्षण नहीं मिला
- 3) भारत में तकनीकी शिक्षा का प्रसार नहीं किया गया :-  
मशीनीकरण के लिए विदेशियों पर निर्भरता बनी रही
- 4) बैंकिंग एवं बीमा क्षेत्र पर ब्रिटिश का नियंत्रण
- 5) भारतीय उद्योग कुछ क्षेत्रों में और कुछ ही व्यक्तियों के हाथों में  
केंद्रित रहे जिससे आर्थिक असंतुलन पैदा हुआ

## 3) मुख्य तथ्य

- 1) ब्रिटिश काल में भारत में चीन से मुख्यता चाय का आयात
- 2) विदेशी पूंजीपति भारतीय उद्योग की ओर आकृष्ट हुए क्योंकि सस्ता  
श्रम, कच्चे माल का बहुत आसानी से कम मूल्य पर उपलब्ध होना
- 3) लंकाशायर के सूती वस्त्रों का भारत में पहली - 1815
- 4) 1925 - भारतीय रेल बजट को सामान्य बजट से अलग करने की  
सिफारिश **एकबर्थ समिति** ने की थी
- 5) बैंक ऑफ़ बंगाल की स्थापना - 1808
- 6) बम्बई पोस्टल यूनियन की स्थापना - 1907
- 7) भारतीय राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस - वल्लभ भाई पटेल
- 9) भारत का पहला श्रमिक संघ - बम्बई मिल हैंड एसोसिएशन (1884)
- 10) आधुनिक बैंकिंग का विकास - नीदरलैंड (1609)
- 11) पहला भारतीय बैंक - पंजाब नेशनल बैंक (1894)
- 12) इंपीरियल बैंक ऑफ़ इंडिया - 1921
- 13) एसबीआई का राष्ट्रीयकरण - 1 जुलाई 1955

## 2) Reason for limited development of modern industries

- 1) **Lack of capital in India :-** Drain of wealth
- 2) Industries did not get government protection
- 3) **Lack of technical education in India :-** Dependence on foreigners for mechanization
- 4) British control over the banking and insurance sector
- 5) Indian industry remained concentrated in a few sectors and in the hands of a few individuals, leading to economic imbalances.

## 3) Key facts

- 1) During the British period, tea was mainly imported from China in India.
- 2) Foreign capitalists were attracted to Indian industry because of cheap labour, easy availability of raw materials at low prices.
- 3) Lancashire cotton textiles first in India - 1815
- 4) 1925 - The **Ekberth Committee** recommended the separation of the Indian Railway Budget from the General Budget.
- 5) Establishment of Bank of Bengal - 1808
- 6) Establishment of Bombay Postal Union - 1907
- 7) Indian National Trade Union Congress - Vallabhbhai Patel
- 8) India's first labor union - Bombay Mill Hand Association (1884)
- 9) Development of Modern Banking - Netherlands (1609)
- 10) First Indian Bank - Punjab National Bank (1894)
- 11) Imperial Bank of India - 1921
- 12) Nationalization of SBI - 1 July 1955



- 14) ए. डी. गोरा वाला समिति - भारतीय स्टेट बैंक की स्थापना
- 15) भारत में बिछाई गई रेल लाइन को कार्ल मार्क्स ने **आधुनिक युग का अग्रदूत** की संज्ञा प्रदान की
- 16) पहला फैक्ट्री एक्ट 1881 में ब्रिटिश काल में बना
- 17) भारत में बैंकिंग संकट 1913 से 1917 के बीच हुआ
- 18) देश में कागज का प्रथम आधुनिक कारखाना - 1832 में सिरामपुर (WB)
- 19) कागज उद्योग का प्रथम सफल कारखाना - 1867 बालीगंज(WB)
- 20) प्रथम आधुनिक कारखाना (ऊनी वस्त्र) 1836 में कानपुर में
- 21) भारत में लोहा और इस्पात उद्योग - बंगाल आयरन एंड स्टील कंपनी (1870) में झारिया के निकट कुल्ती
- 22) यद्यपि भारत में आधुनिक स्तर की प्रथम सूती कपड़ा मिल 1818 में कोलकाता के निकट फोर्ट ग्लोस्टर में लगाई गई थी किंतु यह मिल सफल ना हुई
- 23) द्वितीय मिल मुंबई स्पिनिंग एंड वीविंग कंपनी 1853 में मुंबई में कवास जी एन डावर द्वारा स्थापित की गई
- 24) देश का प्रथम जूट कारखाना जॉर्ज ऑकलैंड द्वारा 1855 में कोलकाता के निकट रिंशरा नामक स्थान पर लगाया गया था भारत में जूट के कारखानों की संख्या 1885 में 11 से बढ़कर 1947 में 116 हो गई
- 25) चीनी उद्योग भारत में सबसे पहले बेतिया(बिहार) में 1840 में लगाया गया
- 26) सीमेंट एक महत्वपूर्ण अवसंरचना उद्योग है इसका अविष्कार 1824 में इंग्लैंड के पोर्टलैंड स्थान पर किया गया था
- 27) भारत में सीमेंट का प्रथम संयंत्र चेन्नई में 1904 में स्थापित किया गया था 1910 में कटनी सीमेंट कंपनी शुरू हुई



- 14) A. D. Gora wala committee - establishment of state bank of india
- 15) Karl marx called the railway line laid in india the **forerunner of the modern era**.
- 16) The first factories act was made in 1881 during the british period.
- 17) The banking crisis in india occurred between 1913 and 1917.
- 18) First modern paper factory in the country - sirampur (wb) in 1832
- 19) First successful factory of paper industry - 1867 ballygunge (WB)
- 20) First modern factory (wool fabric) in 1836 at kanpur
- 21) Iron and steel industry in india - kulti near jharia in bengal iron and steel company (1870)
- 22) Although the first modern cotton textile mill in india was set up in 1818 at fort gloster near kolkata, this mill did not succeed.
- 23) The second mill mumbai spinning and weaving company was established in 1853 in mumbai by kawas g. N. Davar.
- 24) The country's first jute factory was set up by george auckland in 1855 at a place called rinshra near kolkata. The number of jute factories in india increased from 11 in 1885 to 116 in 1947.
- 25) Sugar industry was first established in india in 1840 in bettiah (bihar).
- 26) Cement is an important infrastructure industry, it was invented in 1824 at portland, england.
- 27) The first cement plant in india was established in chennai in 1904, katni cement company was started in 1910.

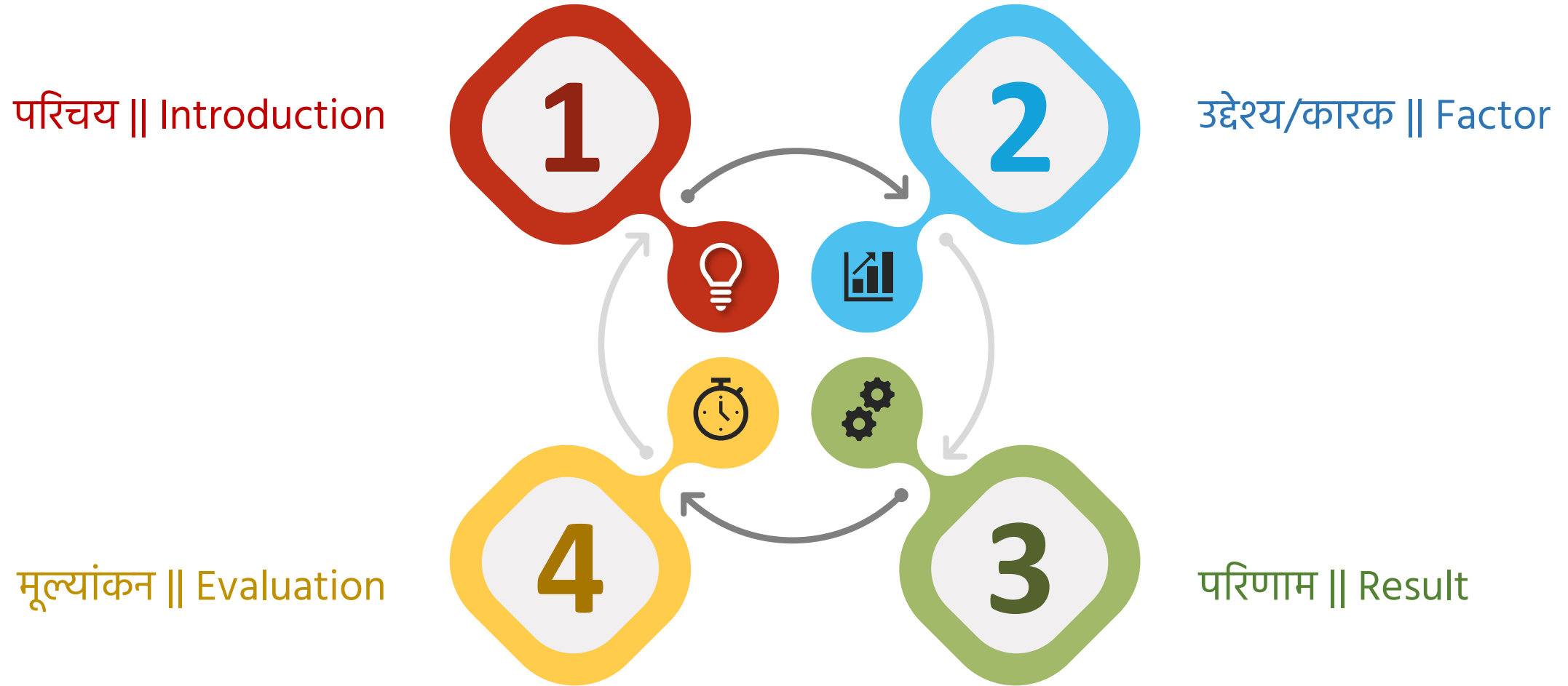
## आर्थिक विकास से संबंधित समितियां/आयोग

समिति/आयोग	स्थापना वर्ष	सिफारिशें
दत्ता समिति	1915	कीमतों के उतार-चढ़ाव के संबंध में सुझाव
मैक्लागन समिति	1915	सहकारी संस्था से संबंधित मुद्दों पर सुझाव
औद्योगिक आयोग	1916	भारतीय उद्योगों तथा व्यापार में वित्त प्रयत्नों के लिए उन क्षेत्रों का पता लगाना जिसमें सरकार सहयोग कर सकें
राजस्व आयुक्त (रहीमुल्लाह आयोग)	1921	उद्योगों को अपने प्रारंभिक विकास की अवस्था में संरक्षण दिया जाना चाहिए
व्हिटले आयोग	1929	औद्योगिक कार्यशाला और बगीचों में श्रम की वर्तमान स्थिति के विषय में सुझाव
स्प्रू समिति	1934	मध्यमवर्गीय बेरोजगारी की जांच

## Committees/Commissions dealing with economic development

committee/commission	establishment year	recommendations
Dutta committee	1915	Tips on price fluctuations
Mclagan committee	1915	Suggestions on issues related to co-operative society
Industrial commission	1916	To identify areas in which the government can cooperate to finance efforts in Indian industry and trade
Revenue commissioner (rahimullah commission)	1921	Industries should be protected in their initial stage of development
Whitley commission	1929	Suggestions regarding the present condition of labor in industrial workshops and gardens
Sapru committee	1934	Middle class unemployment check

### 3.7) रेलवे का विकास || Development of Railways



## 3.7) Development of Railways



**“अंग्रेजों द्वारा भारत में रेलवे का विकास दूसरों की पत्नी के श्रृंगार पर खर्च करने जैसा है | The development of railways in India by the British is like spending on the makeup of the wife of others.”**

**“ बाल गंगाधर तिलक ”**

**16 अप्रैल 1853 : भारत में पहली रेल || First rail in india**



On April 16th, at 3:35pm, the first train in India leaves Bombay for Thane. Initial scheduled services consist of two trains each way between Bombay and Thane and later Bombay and Mahim via Dadar

## 7.1) परिचय और विकास

1. **1831-32 :-** भारत में सर्वप्रथम विलियम बेंटिक के काल में रेल निर्माण का सुझाव दिया गया ।
2. **1836 :-** सर ए. पी. कॉटन ने मद्रास से बम्बई तक रेलवे लाइन बिछाने का सुझाव रखा
3. **1844 :-** पहली बार भापगाड़ी बनाने का प्रस्ताव रखा गया
4. **16 अप्रैल 1853 :-** मुंबई से ठाणे की मध्य प्रथम रेल का संचालन (34 km)



निजी कंपनियों द्वारा

कोलकाता से रानीगंज - ईस्ट इंडिया रेलवे कंपनी

मुंबई से ठाणे - ग्रेट इंडिया पेंसुलर रेलवे

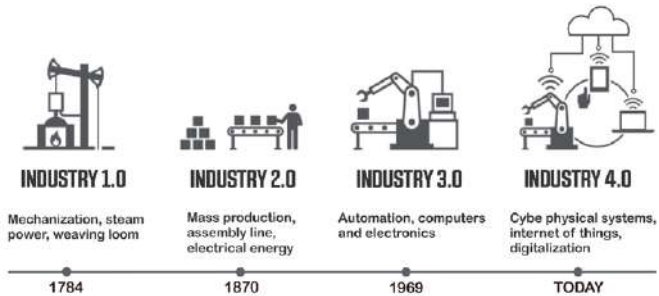
ब्रिटिश पूंजीपतियों का निवेश

बदले में भारतीय राजस्व से 5% लाभांश और ऋण की अदायगी

+

ऋण

धन का बहिर्गमन





## 7.1) Introduction and Development

1. **1831-32** :- Rail construction was first suggested in India during the period of William Bentinck.
2. **1836** :- Sir A. P. Cotton suggested laying a railway line from Madras to Bombay
3. **1844** :- It was proposed to build a steam train for the first time.
4. **16 अप्रैल 1853** :- Operation of the first train from Mumbai to Thane (34 km)



by private companies

**Kolkata to Raniganj** - East India Railway Company

**Mumbai to Thane** - Great India Peninsular Railway

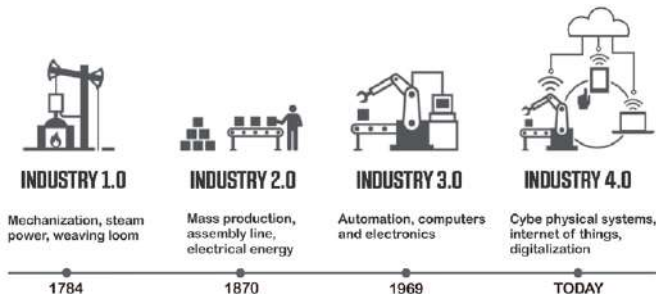
British capitalist investment

In return 5% dividend from Indian revenue and repayment of loan

+

Loan

**Drain of Wealth**





5) **1902** : थॉमस रॉबर्टसन आयोग

↓ सिफारिश

लॉर्ड कर्जन जिसके समय सर्वाधिक रेलवे का विकास हुआ

6) **1905** : रेलवे बोर्ड का गठन

7) **1920** : एक्वर्थ आयोग ————— लॉर्ड चेम्सफोर्ड द्वारा

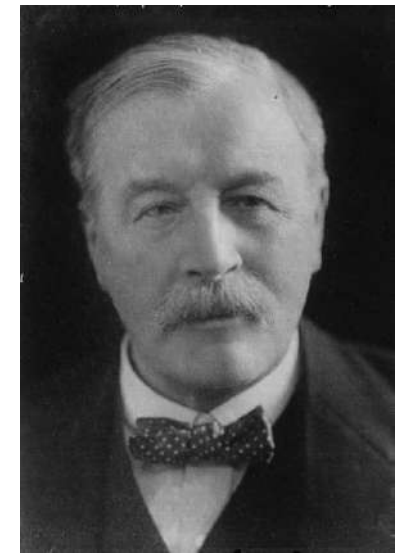
रेल व्यवस्था को पूर्णता सरकारी क्षेत्र के अधीन करना

रेल बजट को आम बजट से अलग करना



1924 में इसे लागू किया ————— लॉर्ड रीडिंग

पुनः आम बजट में - विवेक देवराय समिति की सिफारिश पर 1 फरवरी 2017



8) **1925** : प्रथम इलेक्ट्रॉनिक ट्रेन (बॉम्बे से कुर्ला)

5) **1902** : Thomas Robertson Commission



Recommendation

6) **1905** : Constitution of railway board

Lord Curzon during whose time most railways was developed

7) **1920** : Acworth commission

by Lord Chelmsford

To make the railway system completely under the public sector

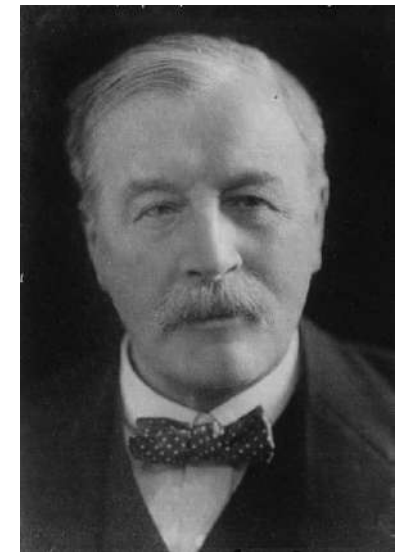
Separation of railway budget from general budget



1924 implemented it in → Lord Reading



Merger - 1 February 2017 on the recommendation of Vivek Devrai Committee



8) **1925** : First Electric Train (Bombay to Kurla)

## 7.2) उद्देश्य/कारक

- 1) ब्रिटिश साम्राज्यवाद के आर्थिक, राजनैतिक, सैनिक तथा औपनिवेशिक हितों की पूर्ति
- 2) ब्रिटिश औद्योगिक क्रांति से उपजी अधिशेष पूंजी के निवेश हेतु
- 3) भारत के दूरस्थ क्षेत्रों तक ब्रिटिश उत्पादों को पहुंचाना
- 4) सेना के तीव्र आवागमन को सुनिश्चित करना
- 5) ब्रिटिश लौह व इस्पात उद्योग को प्रोत्साहन देना
- 6) ब्रिटिश औद्योगिक क्रांति हेतु भारतीय कच्चे माल तक आसान पहुंच सुनिश्चित करना

## 7.3) परिणाम

### सकारात्मक प्रभाव

- 1) भारत को एक राजनीतिक इकाई बना दिया जिससे प्रशासन की दक्षता में वृद्धि एवं कानून व्यवस्था को मजबूती मिली
- 2) राष्ट्रीय आंदोलन की पृष्ठभूमि तैयार हुई

- 3) भारत के आंतरिक बाजारों को जोड़ा

### नकारात्मक प्रभाव

- 1) भारत से धन निकासी का सशक्त माध्यम
  - ≠ रेलवे हेतु 5% लाभांश
  - ≠ रेलवे हेतु कर्ज व ब्याज अदायगी
- 2) भारतीय अर्थव्यवस्था की ऋणग्रस्तता
- 3) भारत में विऔद्योगिकरण
- 4) ब्रिटिश उत्पादों का भारत के बाजार में प्रवेश
- 5) कच्चे माल के निर्यात से भारतीय उद्योगों को क्षति
- 6) रेलवे कलपुर्जों व मशीनरी का पूर्णतः ब्रिटेन से निर्यात

## 7.2) Objectives

- 1) Fulfillment of economic, political, military and colonial interests of British imperialism
- 2) To invest the surplus capital arising out of the British Industrial Revolution
- 3) Transport of British products to remote areas of India
- 4) Ensuring rapid movement of troops
- 5) Promoting the British Iron and Steel Industry
- 6) Ensuring easy access to Indian raw materials for the British Industrial Revolution

## 7.3) Positive impact

- 1) Made India a political unit, which increased the efficiency of administration and strengthened the law and order
- 2) The background of the national movement was prepared
- 3) Connected India's internal markets

## Negative impact

- 1) Powerful way to withdraw money from India
  - ₹ 5% Dividend for Railways
  - ₹ Railway loan and interest payment
- 2) Indebtedness of Indian Economy
- 3) Deindustrialization in India
- 4) British products enter the Indian market
- 5) Injury to Indian industries due to export of raw materials
- 6) Export of railway parts and machinery entirely from UK

## 7.4) मूल्यांकन

"जिस देश में कोयला व लोहा मौजूद हो और वहां परिवहन के साधनों का मशीनीकरण हो जाये तो उस देश में औद्योगिकरण होगा" - **माक्स**

उपरोक्त कथन माक्स ने रेलवे एवं औद्योगिकीकरण के बीच सहसंबंध को स्पष्ट करते हुए कहा वस्तुतः कोयला व लोहा आधारभूत उद्योगों के विकास के लिए सर्वप्रमुख तत्व है। लौह उद्योग के विकास से अन्य उद्योगों के लिए मशीनों की उपलब्धता होती है। फलतः औद्योगिकीकरण को प्रोत्साहन मिलता है। फलतः औद्योगिक इकाइयों में कार्यरत लोगों की आवश्यकतापूर्ति के लिए अन्य सहायक उद्योगों का भी विकास होता है। परिवहन सुविधाओं के मशीनीकरण से व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलता है इस तरह एक औद्योगिक वातावरण का निर्माण होता है। परिवहन के साधनों के मशीनीकरण अर्थात् रेलवे के विकास से औद्योगिकीकरण की यह स्थिति ब्रिटेन जर्मनी जापान आदि देशों में देखी जा सकती है

इस दृष्टि से कार्ल माक्स का कथन सत्य साबित होता है किंतु भारत के संदर्भ में यह कथन लागू नहीं हो पाता यद्यपि भारत में अत्यंत कम समय में तीव्र गति से रेलवे का विकास हुआ है परंतु यहां औद्योगिकीकरण नहीं हो सका इसका कारण यह था कि भारत एक उपनिवेश था और ब्रिटेन अपने देश के औद्योगिक हितों को ध्यान में रखते हुए तथा भारत में अपने राजनीतिक प्रशासनिक सैनिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए रेलवे का विकास कर रहे थे रेलवे से संबंधित सभी कलपुर्जे रेल लाइन का निर्माण ब्रिटेन के उद्योगों में होता था और वहां से लाकर ने भारत में लगा दिया गया ऐसे में भारत में औद्योगिकीकरण कैसे होता इतना ही नहीं ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं को भारतीय बाजार में लाकर रेलवे ने उसकी विऔद्योगिकीकरण की प्रक्रिया को तीव्रता प्रदान की और धन निकासी का मार्ग सुदृढ़ किया इस तरह भारत में रेलवे ने वही किया जो अन्यत्र नहीं किया

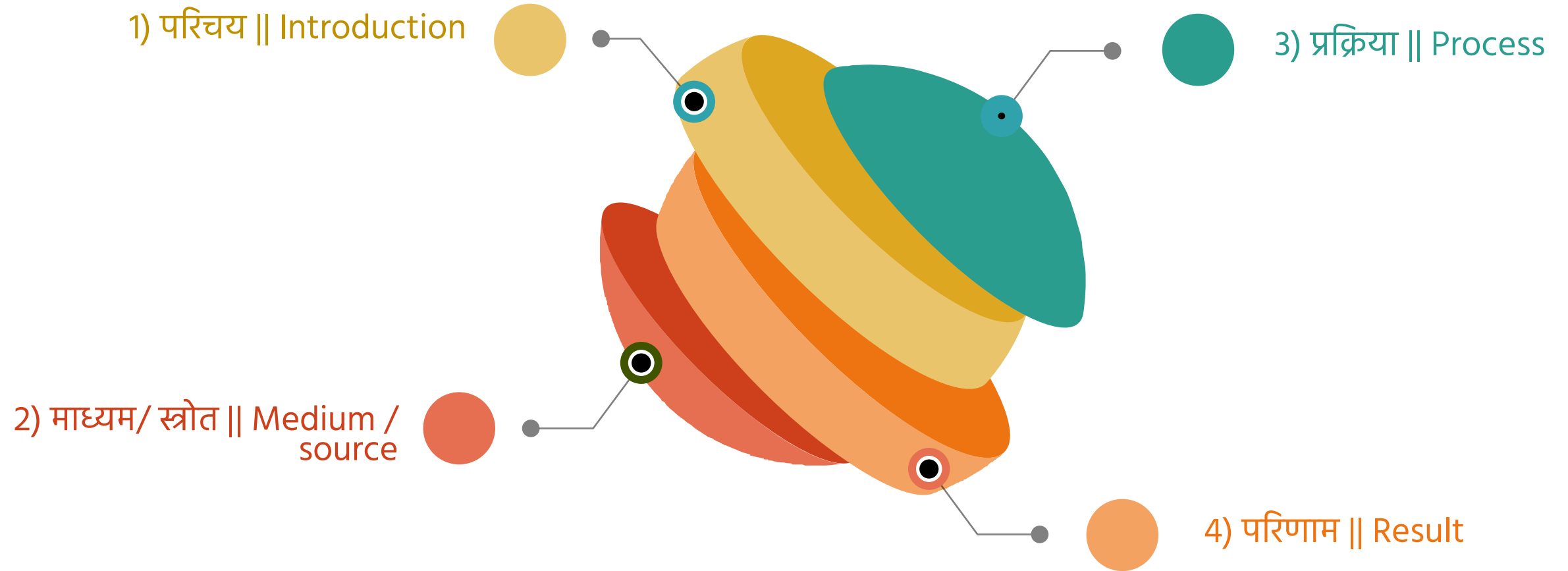
## 7.4) Evaluation

"In a country where coal and iron are present and the means of transport are mechanized there, there will be industrialization" - **Marx**

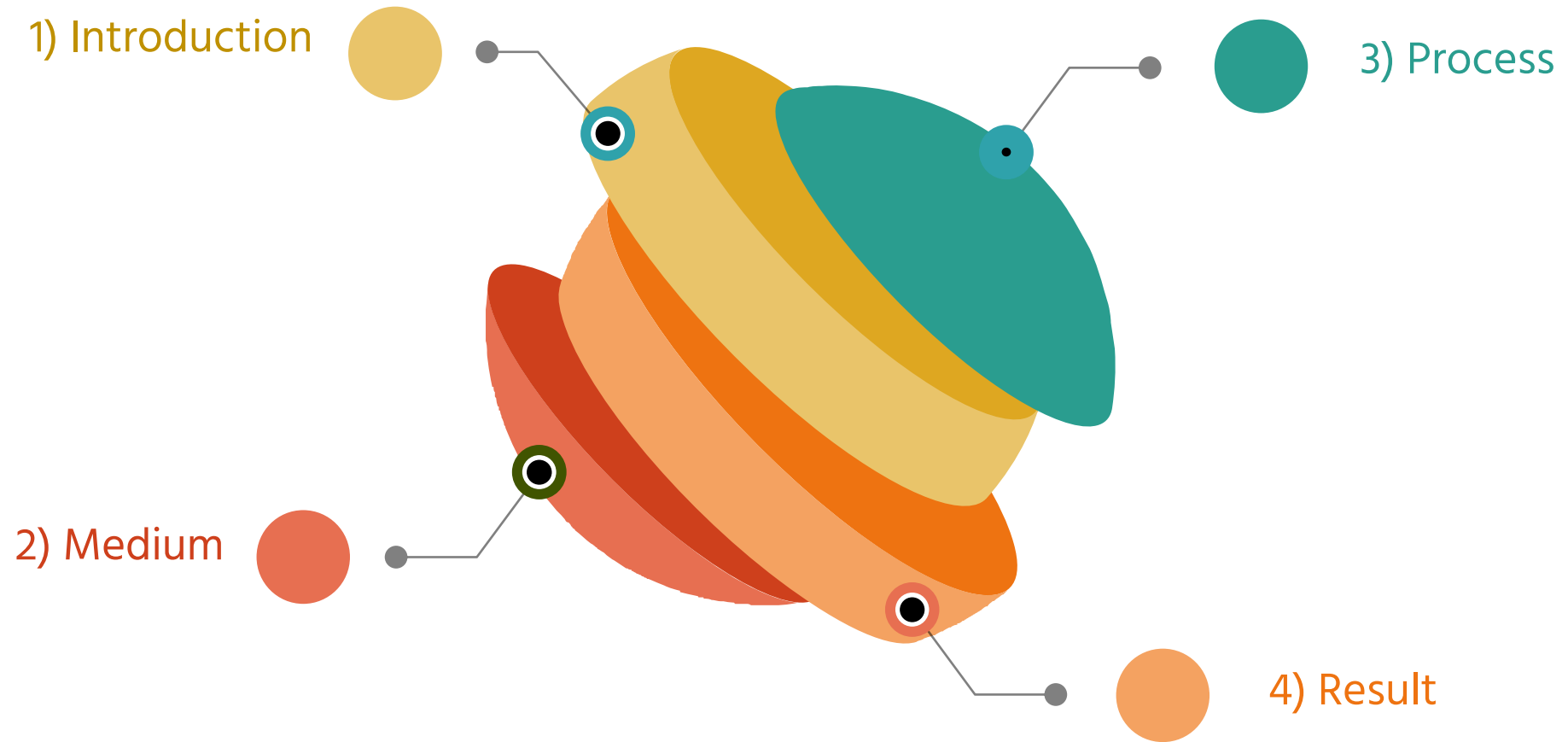
Explaining the above statement, Marx clarified the correlation between railways and industrialization and said that in fact coal and iron are the most important elements for the development of basic industries. The development of iron industry leads to availability of machines for other industries. As a result industrialization gets encouraged. As a result, other ancillary industries also develop to meet the needs of the people working in the industrial units. The mechanization of transport facilities encourages business activities, thus creating an industrial environment. This state of industrialization can be seen in countries like Britain, Germany, Japan etc.

From this point of view, the statement of Karl Marx proves to be true, but this statement is not applicable in the context of India, although there has been rapid development of railways in India in a very short time but industrialization could not take place, the reason was that India was a colony and Britain was developing the railway for its industrial interests and to fulfill its colonial purposes, all the parts related to the railway were manufactured in Britain, not only this, by bringing British manufactured goods to the Indian market, the railways accelerated the process of its deindustrialization and strengthened the way of drain in wealth in India

### 3.8) धन का निष्कासन || Drain of Wealth



## 3.8) Drain of Wealth





## 8.1) परिचय

- 1) भारत से ब्रिटेन की ओर धन निष्कासन प्लासी युद्ध 1757 के बाद आरंभ हुआ जिसका वर्णन 1867 में दादा भाई नौरोजी ने अपने लेख "**इंग्लैंड डेब्ट टू इंडिया**" में प्रस्तुत किया
- 2) **अर्थ :-** भारत से ब्रिटेन को होने वाला धन (मुद्रा व वस्तु) हस्तांतरण जिसके समतुल्य भारत को प्रतिफल नहीं मिला
- 3) **जॉन विनेगर :-** 1834 से 51 भारत से प्रति वर्ष 42 लाख पौंड इंग्लैंड भेजे गए
- 4) 1896 के कलकत्ता अधिवेशन (अध्यक्ष-रहीमतुल्ला सयानी) में कांग्रेस की स्वीकृति
- 5) दादा भाई नौरोजी ने इसे "**अनिष्टों का अनिष्ट**" (Evil of all Evil) कहा

## 8.2) माध्यम/ स्रोत

- 1) कृषि भूमि पर लागू भू-राजस्व व्यवस्था विशेषकर बंगाल की स्थाई कर प्रणाली।
- 2) ब्रिटिश कम्पनी के अधिकारियों के वेतन, भत्ते, पेंशन आदि।
- 3) भारतीय सार्वजनिक ऋण पर दिया जाने वाला ब्याज।
- 4) 'व्यापार, उद्योग और बागानों में निवेश की गई पूंजी पर आय।
- 5) "विदेशी बैंक, बीमा और नौवहन कम्पनियों के द्वारा भारत से लाभ का अर्जन।
- 6) 'विदेशी पूंजी निवेश पर दिया जाने वाला ब्याज।
- 7) कम्पनी के शेयरधारकों को दिया जाने वाला लाभांश।
- 8) इंग्लैंड में रखा गया सुरक्षित कोष जिसमें भारतीय मुद्रा को रखा गया था।
- 9) गृह प्रभार (होम चार्जेज) के खर्च के अंतर्गत भारत की ब्रिटिश सरकार द्वारा ब्रिटेन में किया गया खर्च, जैसे- इंग्लैंड में नियुक्त यूरोपीय अधिकारियों के वेतन, भत्ते एवं पेंशन, रेलवे पर प्रत्याभूत ब्याज, सैनिक साम्रगियों की खरीद, सरकारी ऋण पर ब्याज आदि। 1857 के पूर्व 10% जो 1920 में 40% हो गया

## 8.1) Introduction

- 1) Drain of wealth from India to Britain started after battle of Plassey, which was described by Dadabhai Naoroji in 1867 in his article "**England Debt to India**".
- 2) **Meaning :-** The transfer of wealth from India to England for which Indian got no proportionate economic return
- 3) **John Vinegar :-** From 1834 to 1851 India sent 4.2 million pounds per year to England
- 4) Congress's approval at the Calcutta session of 1896 (President-Rahimatullah Sayani)
- 5) Dadabhai Naoroji called it the "**Evil of all evils**".

## 8.2) Medium / source

- 1) Land revenue system especially the permanent settlement.
- 2) Salaries, allowances, pensions etc. of British employees
- 3) Interest paid on Indian public debt.
- 4) Income on capital invested in trade, industry and tea.
- 5) Profit from India by foreign banks, insurance and shipping companies.
- 6) Dividend paid to the shareholders of the company.
- 7) Fund kept in England in Indian currency
- 8) Home charges refer to the expenditure carried out by British in London on behalf of India. The component of Home Charges where the dividend is paid by the company to its shareholder, interest paid by the company on loan raised in London. Salary & pension of officials working in London on behalf of British India

### 8.3) प्रक्रिया

#### प्रथम चरण (1757-1813)

- प्लासी व बक्सर विजय से बंगाल की संपत्ति
- नवाबों से उपहार व रिश्वत
- बंगाल के राजस्व से युद्ध व व्यापार
- पर्सिबल स्पीयर - खुली व बेरहम लूट

#### द्वितीय चरण (1813-1858)

- ब्रिटिश औद्योगिक क्रांति - भारत का विऔद्योगीकरण
- मुक्त व्यापार की नीति
- कृषि का वाणिज्यीकरण
- रेलवे में 5% लाभांश की गारंटी
- कार्ल मार्क्स - Bleeding Process

#### तृतीय चरण (1858 के बाद)

- गृह व्यय
- लाभांश
- दादाभाई नौरोजी  
- अनिष्टों का  
अनिष्ट

### 8.3) Process

#### First round (1757-1813)

- Bengal's wealth from Plassey and Buxar conquest
- Gifts and bribes from Nawabs
- War and trade from Bengal's revenue
- Percival Spear - Open and merciless loot

#### Phase III (after 1858)

- Home Charges
- Dividend
- Dadabhai
- Naoroji - The evil of evils

#### Phase II (1813-1858)

- British Industrial Revolution - Deindustrialization of India
- free trade policy
- commercialization of agriculture
- 5% dividend guarantee in Railways
- Karl Marx - Bleeding Process

## 4) परिणाम

धन की निकासी का सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि सभी पक्षों पर गहरा प्रभाव पड़ा जिससे भारत को स्वतंत्रता के बाद भी अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा धन निकासी के प्रभाव इस प्रकार हैं -

- 1) राष्ट्रीय आय में कमी व निर्धनता में वृद्धि
- 2) भारत में पूंजी संचय के अभाव से औद्योगिक पिछड़ापन
- 3) कृषि का विनाश, निवेश में कमी व कृषक शोषण
- 4) भारत में विऔद्योगीकरण व बेरोजगारी
- 5) कृषि के वाणिज्यीकरण पर अत्याधिक अकाल - 19वीं सदी में 24 अकालों से लगभग 3 करोड़ मौतें
- 6) भारत में प्रति व्यक्ति कर भार 14% था, जो इंग्लैंड से दोगुना था
- 7) धन निकासी ने गरीबी और ऋणग्रस्तता में वृद्धि - भारत में लोगों की क्रय शक्ति सीमित में कमी
- 8) धन निकासी से ब्रिटेन की औद्योगिक क्रांति को प्रेरणा और ब्रिटिश की समृद्धि

उदारवादी राष्ट्रीय नेताओं ने धन निकासी सिद्धांत को स्पष्ट कर ब्रिटिश के शोषक चेहरे को उजागर किया फलतः भारतीय बुद्धिजीवियों को ब्रिटिश द्वारा भारत के शुभचिंतक होने का दावा एक धोखा नजर आया इसी क्रम में ब्रिटिश आर्थिक नीतियों का विरोध शुरू हुआ और राष्ट्रवादी भावनाएं तीव्र हुईं

## 4) Result

The drain of wealth had a profound effect on all aspects i.e., social, economic, political etc., due to which India had to face many challenges even after independence, the effects are as follows -

- 1) Decrease in national income and increase in poverty
- 2) Industrial backwardness due to lack of capital accumulation in India
- 3) Destruction of agriculture, lack of investment and exploitation of farmers
- 4) Industrialization and unemployment in India
- 5) Extreme famine on commercialization of agriculture - about 30 million deaths from 24 famines in the 19th century
- 6) India's per capita tax burden was 14%, twice that of England
- 7) Indebtedness - decrease in the purchasing power of the people in India
- 8) Inspired Britain's industrial revolution and British prosperity

The liberal national leaders exposed the exploitative face of the British by clarifying drain of wealth theory, as a result of which the Indian intellectuals saw the claim of the British to be India's well-wisher as a hoax.

## NOTE

- 1) **समर्थक :-** आर.सी. दत्ता ( इकोनामिक हिस्ट्री ऑफ़ इंडिया), सुरेंद्रनाथ बनर्जी, जी सुब्रमण्यम, एमजी रानाडे, जी.बी. जोशी
- 2) **विरोध :-** सर सैयद अहमद खान
- 3) 1896 के कोलकाता अधिवेशन में दादाभाई नौरोजी के धन निष्कासन के सिद्धांत को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने स्वीकार किया था
- 4) 1901 में इंपीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल में धन के बहिर्गमन के सिद्धांत को **गोपाल कृष्ण गोखले** ने प्रस्तुत किया
- 5) **राष्ट्रीय आय** का प्रथम वैज्ञानिक आकलन **डॉ वी के आर वी राव** ने किया
- 6) **नैतिक निकास की व्याख्या दादा भाई नौरोजी ने की :-** भारतीयों को उनके ही देश में विश्वास तथा उत्तरदायित्व पूर्ण पदों से वंचित करने की ब्रिटिश नीति ही नैतिक निकास है
- 7) **दादा भाई नौरोजी :-** “ब्रिटिश शासन भारत से निकलने वाला खून का एक दरिया है”
- 8) दादा भाई नौरोजी द्वारा धन के बहिर्गमन के सिद्धांत को **पॉवर्टी एंड अनब्रिटिश रूल इन इंडिया** में प्रतिपादित किया था
- 9) **दादा भाई नौरोजी :-** भारत का धन बाहर जाता है और फिर वही धन भारत में ऋण के रूप में आ जाता है और इस ऋण के लिए और अधिक ब्याज एक प्रकार का यह ऋण कुचक्र सा बन जाता है
- 10) वेल्ची आयोग ने धन संपत्ति के दोहन के मामले को लेकर दादाभाई नौरोजी से प्रश्न किया था
- 11) भारत में प्रति व्यक्ति आय का **20रुपये/वर्ष(1867-68ई)** अनुमान दादाभाई नौरोजी ने किया था
- 12) मार्क्स ने इसे **Bleeding Process** की उपमा प्रदान की

## NOTE

- 1) **Supporter :-** R.C. Datta, Surendranath Banerjee, G. Subramaniam, MG Ranade, G.B. Joshi
- 2) **Opposed by :-** Sir Syed Ahmed Khan
- 3) **Gopal Krishna Gokhale** presented the principle to the Imperial Legislative Council in 1901.
- 4) **Dr. VKR V Rao** did the first scientific assessment of **national income**
- 5) **The moral exit was explained by Dadabhai Naoroji :-** The British policy of depriving Indians of trust and responsible positions in their own country is the only moral exit.
- 6) **Dadabhai Naoroji :-** "British rule is a river of blood coming out of India"
- 7) The drain of wealth was propounded by Dadabhai Naoroji in **Poverty and UnBritish Rule in India**
- 8) **Dada Bhai Naoroji :-** India's money goes out and then the same money comes to India in the form of loan and more interest for this loan becomes a kind of loan vicious cycle
- 9) The Velvi Commission had questioned Dadabhai Naoroji regarding the matter of exploitation of wealth.
- 10) The per capita income in India was estimated by Dadabhai Naoroji at **Rs.20/year (1867-68E)**
- 11) Marx likened it to **bleeding process**



## NOTE

- 11) राष्ट्रवादी नेता **रमेश चंद्र दत्त** ने अपनी **पुस्तक इकोनामिक हिस्ट्री ऑफ़ इंडिया** में धन निष्कासन के सिद्धांत पर बल दिया
  - ‡ आर्थिक इतिहास की पहली प्रसिद्ध पुस्तक
  - ‡ उन्होंने धन के निष्कासन को नादिर शाह जैसे विदेशी आक्रांताओं द्वारा की गई लूटमार से भी अधिक घातक बताया
- 12) **जॉन सॉल्विन :-** हमारी व्यवस्था बहुत कुछ स्पंज की तरह काम करती है, जो गंगा के तट से सभी अच्छी चीजों को सोख कर टेम्स नदी के किनारे लाकर निचोड़ देती है
- 13) ब्रिटिश शासन काल में संपत्ति दोहन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्रोत **होम चार्जेज(गृह कर)** था
- 14) स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर अर्थात् 1944-46 के मध्य कुल राष्ट्रीय आय 4931 करोड़ तथा **प्रति व्यक्ति आय ₹204** थी
- 15) सर्वप्रथम दादा भाई नौरोजी ने धन निष्कासन के सिद्धांत का वर्णन अपनी पुस्तक "द पॉवर्टी एंड अनब्रिटिश रूल इन इंडिया" में किया, जिसे 1867 में लंदन में हुई ईस्ट इंडिया एसोसिएशन की बैठक में इंग्लैंड डेब्ट टू इंडिया नामक अपने लेख के माध्यम में इस सिद्धांत को प्रस्तुत किया
- 16) 1872 में न्यायमूर्ति महादेव गोविंद रानाडे ने पुणे में भारतीय व्यापार और उद्योग पर एक व्याख्यान दिया जिसमें उन्होंने धन के बहिर्गमन के सिद्धांत की आलोचना की और कहा कि राष्ट्रीय पूंजी का 1/3 भाग किसी ना किसी रूप में भारत से बाहर ले जाया जा रहा है

## NOTE

- 11) Nationalist leader **Ramesh Chandra Dutt** in his **book Economic History of India** emphasized on the principle
  - ‡ First book of economic history
  - ‡ He described the siphoning of wealth as more lethal than the plunder by foreign invaders like Nadir Shah.
- 12) **John Selvin :-** Our system works a lot like a sponge, sucking up all the good things from the banks of the Ganges and bringing them to the banks of the Thames
- 13) The most important source of drain of wealth during the British rule was **home charges**.
- 14) On the eve of independence i.e. between 1944-46, the total national income was ₹4931 crore and the **per capita income was ₹204**.
- 15) For the first time, Dadabhai Naoroji described the drain of wealth in his book "The Poverty and UnBritish Rule in India", which in 1867 at the meeting of the East India Association in London, through his article titled **England Debt to India** presented
- 16) In 1872, Justice Mahadev Govind Ranade delivered a lecture on Indian trade and industry in Pune in which he criticized the theory of outflow of money and said that 1/3 of the national capital was being taken out of India in some form or the other.

# दादा भाई नौरोजी | Dada Bhai Naoroji

1. जन्म | Birth → नवसरी मुंबई | Navsari Mumbai

2. मृत्यु | Death → मुंबई | Mumbai

3. भारत के वयोवृद्ध पुरुष (Grand old man of India )

4. भारत के औपचारिक राजदूत (Official Ambassador of india )

5. कांग्रेस के अध्यक्ष | President of congress

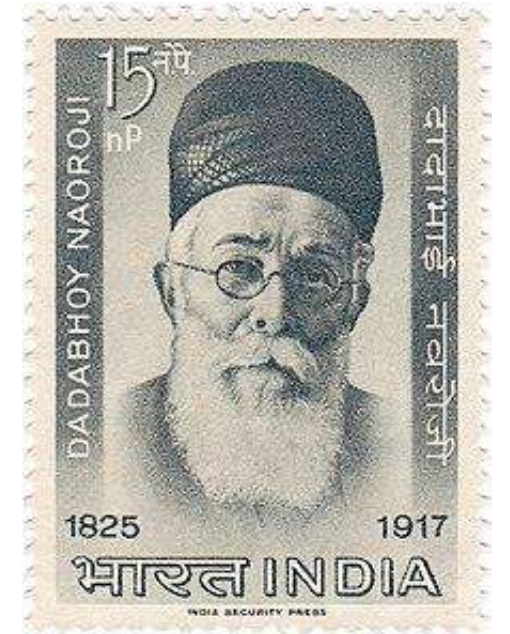
1886 – कोलकाता | Kolkata

1893 - लाहौर | Lahore

1906 - कोलकाता | Kolkata

→ पहली बार स्वराज शब्द का प्रयोग | Use of the word Swaraj for the first time

6. 1865 में डब्ल्यू. सी. बनर्जी के साथ | In 1865, W.W. With C. Banerjee → लंदन इंडियन सोसायटी | London Indian Society



## 7. 1892 - 1895

ब्रिटिश के हाउस ऑफ कॉमंस में चुने जाने वाले प्रथम भारतीय | First Indian to be elected to the British House of Commons

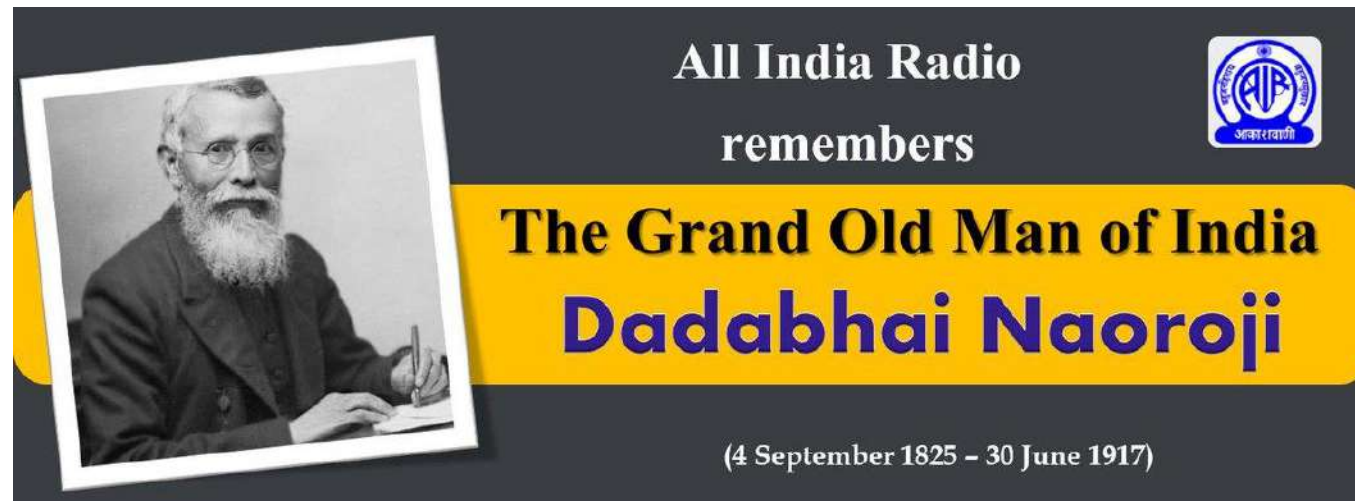
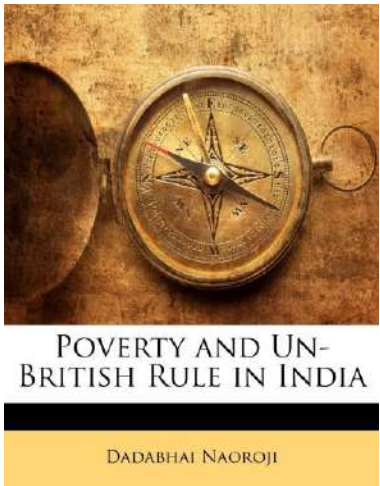
लिबरल पार्टी के टिकट पर | On Liberal Party Ticket

फिंसबेरी से निर्वाचित | Elected from Fins berry

## 8. पुस्तकें और लेख

|| Books and articles

- 1) इंग्लैंड डेब्ट टू इंडिया | England debt to India (1867)
- 2) पावर्टी एंड अनब्रिटिश रूल इन इंडिया | Poverty and Un-british Rule in India (1902)
- 3) द वॉन्ट्स एंड मींस ऑफ इंडिया | The wants and means of india (1876)
- 4) ऑन द कॉमर्स ऑफ इंडिया | On the commerce of india (1871)



### 3.9) भारत में अकाल || Famine in india

परिचय || Introduction

01

अकाल के प्रभाव || Effects of famine

04

ब्रिटिश काल में पड़ने वाले अकाल  
|| British famine

02

अकाल दूर करने हेतु ब्रिटिश नीतियां  
|| British policies to end famine

05

ब्रिटिश काल में अकाल का कारण ||  
Cause of famine in British period

03

प्रमुख अकाल आयोग || Major  
famine commission

06

## **3.9) Famine in india**

**Introduction**

**01**

**Effects of famine**

**04**

**British famine**

**02**

**British policies to end famine**

**05**

**Cause of famine in British period**

**03**

**Major famine commission**

**06**

## 9.1) परिचय

- 1) ब्रिटिश पूर्व भी भारत में अकाल पड़ते रहते हैं परंतु ब्रिटिश काल में औपनिवेशिक कारणों से अकालों की बारंबारता हेतु ब्रिटिश नीति उत्तरदायी थी
- 2) भारतीय कृषि मुख्यता वर्षा पर निर्भर है और भारत में मानसून द्वारा होने वाली वर्षा की प्रकृति प्रायः अनिश्चित देखी गई है
- 3) कौटिल्य के अर्थशास्त्र में अकाल को कम करने के लिए अनेक राहत कार्यों का वर्णन किया गया है

## 9.2) ब्रिटिश काल में पड़ने वाले अकाल

### A) कंपनी शासन में अकाल (1757-1857)

- 1) **1769-70 :- बंगाल बिहार एवं उड़ीसा** की एक तिहाई आबादी नष्ट हो गई कंपनी ने अकाल पीड़ित व्यक्तियों को सहायता एवं राहत पहुंचाने के ठीक विपरीत इस विषम परिस्थिति में लाभ कमाया
  - **प्रतिक्रिया** - बंगाल में सन्यासी विद्रोह (बंकिम चंद्र चटर्जी - आनंदमठ उपन्यास)
  - सन्यासियों के नेतृत्व में कंपनी के गोदामों पर आक्रमण
  - वारेन हेस्टिंग्स द्वारा कठोरता पूर्वक दमन
- 2) इसी प्रकार 1781-82, 1784 और 1792 में मद्रास और उत्तरी भारत में सूखा तथा अकाल पड़ा
- 3) 1792 की पूर्व कंपनी ने अकाल पीड़ितों को राहत पहुंचाने के लिए कोई प्रयास नहीं किया

## 9.1) Introduction

- 1) There are famines in India even before the British, but during the British period, British policy was responsible for the frequency of famines due to fulfill its colonial interests.
- 2) Indian agriculture is mainly dependent on rainfall and the nature of monsoon in India is uncertain.
- 3) Many relief works have been described in Kautilya's Arthashastra to reduce the famine.

## 9.2) British Famine

### A) Famine in Company rule (1757-1857)

- 1) **1769-70 :-** One third of the population of **Bengal, Bihar and Orissa** was destroyed.
  - **Reaction** - Sanyasi Rebellion in Bengal (Bankim Chandra Chatterjee - Anandamath Novel)
  - Company's warehouses attacked under the leadership of sannyasis
  - Rigorously Suppressed by Warren Hastings
- 2) Similarly, there was drought and famine in Madras and northern India in 1781-82, 1784 and 1792.
- 3) Prior to 1792 the company made no effort to provide relief to the famine victims



## B) क्राउन शासन में अकाल (1858-1947)

- 1) 1860-61 में दिल्ली आगरा क्षेत्र में भीषण अकाल
  - दो लाख लोगों की मृत्यु
  - पहली बार दरिद्र शालाओं का प्रयोग राहत कार्य के लिए
- 2) 1865-66 के दौरान उड़ीसा, बंगाल और बिहार में भीषण अकाल पड़ा
  - लगभग 20 लाख लोगों की मृत्यु
- 3) 19 वीं सदी का सबसे भयंकर अकाल 1876-78 में पड़ा इसमें मद्रास, मैसूर, बम्बई तथा उत्तरप्रदेश मुख्यतः प्रभावित हुए जिसमें **50 लाख** लोगों को अपनी जान गवानी पड़ी
- 4) **विलियम डिग्बी** के अनुसार 1854 से 1901 के बीच पड़ने वाले अकालों में **दो करोड़** से अधिक लोग मारे गए
- 5) 1943 में बंगाल में भीषण अकाल पड़ा जिसमें 30 लाख लोगों की मृत्यु तत्कालीन भारत में पड़ने वाले इन अकालों और उनमें मरने वालों की भारी संख्या यह स्पष्ट करती है कि ब्रिटिश सरकार द्वारा बनाई गई अकाल नीति में अपेक्षित राहत एवं सहायता का अभाव था

## 9.3) ब्रिटिश काल में अकाल का कारण

- 1) ब्रिटिश आर्थिक नीतियां
- 2) कृषि का वाणिज्यीकरण
- 3) भारतीय हस्तशिल्पियों का पतन
- 4) खाद्यान्न का अधिकाधिक निर्यात
- 5) उचित प्रबंधन एवं नीतियों का अभाव

## 9.4) अकाल के प्रभाव

- 1) जान एवं माल की क्षति
- 2) ग्रामीण ऋणग्रस्तता को बढ़ावा
- 3) हस्तशिल्पों का पतन
- 4) कृषक असंतोष एवं विद्रोह का प्रोत्साहन
- 5) मानव मृत्यु दर में वृद्धि की एवं अत्यधिक पशुधन का हास हुआ
- 6) पाबना दंगे, दक्कन उपद्रव, खेड़ा सत्याग्रह आदि

## B) Famine in Crown Rule (1858-1947)

- 1) Great famine in Delhi-Agra region in 1860-61
  - 2 Million deaths
  - For the first time, relief camps were used for relief work
- 2) There was severe famine in Orissa, Bengal and Bihar during 1865-66
  - Nearly 20 lakh people died
- 3) The worst famine of the 19th century occurred in 1876-78, in which Madras, Mysore, Bombay and Uttar Pradesh were mainly affected, in which **50 lakh** people lost their lives.
- 4) **William Digby** - More than **20 million** people died in the famines occurred between 1854 and 1901.
- 5) 1943 - Severe famine in Bengal in which 30 lakh people died.
- 6) These famines and the huge number of people who died in them make it clear that the famine policy formulated by the British government lacked the requisite relief and assistance.

## 9.3) Cause of famine

- 1) British economic policies
- 2) Commercialization of agriculture
- 3) Decline of Indian Handicrafts
- 4) Export of food grains
- 5) Lack of proper management and policies

## 9.4) Effects of famine

- 1) Loss of life, property & livestock
- 2) Rural indebtedness
- 3) Decline of handicrafts industries
- 4) Peasant discontent and rebellion
- 5) Increased human mortality
- 6) Pabna riots, Deccan riots, Kheda Satyagraha etc.

## 9.5) अकाल दूर करने हेतु ब्रिटिश नीतियां

### A) कम्पनी शासन (1757-1857)

#### A) कम्पनी शासन (1757-1857)

- 1) कंपनी राज्य विस्तार व औपनिवेशिक हितों की पूर्ति में व्यस्त



स्पष्ट नीति व राहत कार्यों का अभाव

- 1) 1792 में मद्रास अकाल पीड़ितों की सीमित सहायता

### B) क्राउन शासन (1857-1947)

- 1) अकाल हेतु स्पष्ट नीति बनाने हेतु आयोगों का गठन व सुधारात्मक कदम
- 2) 1860-61 के दिल्ली आगरा अकाल में राहत हेतु केंद्रीय सहायता

### B) क्राउन शासन (1857-1947)

- 2) **उड़ीसा अकाल :-** जॉर्ज कैम्पबेल आयोग (1866)



सरकार को राहत कार्यों का भार उठाना चाहिए

- 4) लिटन द्वारा रिचर्ड स्ट्रेची की अध्यक्षता में प्रथम अकाल आयोग (1878) :-
  - ≠ लगान / करों में राहत
  - ≠ अकाल संहिता का निर्माण
  - ≠ 1883में अकाल कोष(प्रति वर्ष 1 करोड़ रुपये)

- 5) **1943** में बंगाल दुर्भिक्ष आयोग (अंतिम) - भारतीय खाद्यान्न परिषद कुल मिलाकर कंपनी के शासनकाल में ब्रिटिश अकाल नीति पूर्णता अस्पष्ट थी और बाद में जब क्रमशः स्पष्ट नीति का विकास हुआ तब इस पर पूर्ण अमल नहीं किया गया

## 9.5) British policies to end famine

### A) Corporate governance (1757-1857)

#### A) Corporate governance (1757-1857)

- 1) Company engaged in state expansion and fulfillment of colonial interests



Lack of clear policy and relief work

- 1) Limited aid to the victims of the Madras famine in 1792

#### B) Crown rule (1857-1947)

- 1) Formation of commissions and corrective steps to make clear policy for famine
- 2) Central assistance for relief in the Delhi-Agra famine of 1860-61

### B) Crown rule (1857-1947)

- 2) **Orissa famine :-** George Campbell Commission (1866)



Government should bear the burden of relief work

- 4) First Famine Commission (1878) by Lytton under the chairmanship of Richard Strachey :-
  - ‡ Relief in rent / taxes
  - ‡ creation of famine code
  - ‡ Famine Fund in 1883 (Rs 1 crore per year)
- 5) Bengal Famine Commission (Final) in **1943** - Food Council of India Overall, the British famine policy during the Company's rule was vague and not fully implemented later when a clear policy was developed.

## 9.6) प्रमुख अकाल आयोग

समिति/आयोग का नाम	गठन का वर्ष	मुख्य सिफारिशें	परिणाम
कर्नल स्मिथ समिति	1860-61	समिति ने 1860-61 में <b>दिल्ली तथा आसपास के क्षेत्रों</b> में आये अकाल के कारणों तथा उनकी उग्रता की जांच की	रिपोर्ट का कोई विशेष परिणाम नहीं निकला
जॉर्ज कैम्पबेल समिति	1866-67	1866-67 में <b>उड़ीसा</b> में आए अकाल के संदर्भ में इस समिति ने अपनी रिपोर्ट पेश की समिति का मानना था कि सिर्फ स्वयंसेवी संस्थाएं ही राहत कार्यों के लिए उत्तरदाई नहीं है	सरकार ने आयोग की सिफारिशों के अनुरूप अकाल राहत कार्यों को अंजाम दिया परंतु अनमने ढंग से किए गए इस प्रयास से कोई विशेष लाभ नहीं हुआ
स्ट्रेची आयोग (लॉर्ड लिटन)	1880	इस प्रथम अकाल आयोग ने सिफारिश की कि जरूरतमंद लोगों को सहायता पहुंचाना राज्य का कर्तव्य है और असक्षम तथा अशक्त लोगों को भोजन दिया जाए। प्रत्येक प्रांत में ' <b>अकाल कोष</b> ' होना चाहिए	सरकार ने <b>अकाल कोष</b> स्थापित करने के प्रयास किये ।  <b>1883 में अकाल संहिता</b> निश्चित की गई

## 9.6) Major famine commission

Name of the Committee/Commission	year of formation	Key Recommendations	Result
<b>Colonel Smith Committee</b>	1860-61	The committee examined the causes and severity of the famines in <b>Delhi and its surrounding</b> areas in 1860-61.	The report did not yield any specific results
<b>George Campbell Committee</b>	1866-67	In the context of the famine in <b>Orissa</b> in 1866-67, this committee presented its report. The committee believed that only voluntary organizations are not responsible for relief work.	The government carried out famine relief works as per the recommendations of the commission, but this effort made in a reckless manner did not yield any special benefit.
<b>Strachey Commission (Lord Lytton)</b>	1880	This First Famine Commission recommended that it is the duty of the state to provide aid to the needy and food should be given to the incapable and infirm. Every province should have a ' <b>Famine Fund</b> '	The government made efforts to set up a <b>famine fund</b> . Famine code was fixed in <b>1883</b>

लायन आयोग(लॉर्ड एल्लिन II)	1897	1896-97 के महान अकाल के संदर्भ में इस आयोग ने <b>स्ट्रेची आयोग की सिफारिशों से सहमति</b> प्रकट की तथा उसमें लचीलापन लाने की दृष्टि से कुछ परिवर्तन करने की अनुशंसा की	आयोग की सिफारिशों को मान लिया गया
सर एंटनी मैकडोनल आयोग(लार्ड कर्जन)	1900	आयोग ने 1901 में सिफारिश की कि अकाल सहायता और अनुदान सहायता और अनुदान में दी गयी सहायता पर आवश्यकता से अधिक बल दिया गया है । इसमें <b>नैतिक नीति तथा ग्राम स्तर के कार्यों को प्राथमिकता</b> दी	आयोग की सिफारिशों के आधार पर आगे की अकाल सहायता नीति निर्धारित हुई
जान वुडहेड आयोग	1945	1945 में आये अकाल की जांच के लिए <b>सर जान वुडहेड</b> की अध्यक्षता में एक <b>अकाल जांच कमीशन</b> बैठाया गया	

<b>Lion Commission (Lord Elgin II)</b>	1897	In the context of the great famine of 1896-97, this commission agreed with the recommendations of the <b>Strachey Commission and recommended</b> some changes in order to bring flexibility in it.	The recommendations of the commission were accepted
<b>Sir Antony McDonnell Commission (Lord Curzon)</b>	1900	The commission recommended in 1901 that the famine aid and grant-in-aid and grant-in-aid have been over-emphasised. In this, priority was given to <b>ethical policy and village level works.</b>	Based on the recommendations of the commission, the further famine aid policy was determined.
<b>John Woodhead Commission</b>	1945	A Famine Inquiry Commission was set up under the chairmanship of <b>Sir John Woodhead</b> to <b>investigate the famine</b> in 1945.	



### 3.10) भारत में बैंकिंग



- 5) 1894 :- पंजाब नेशनल बैंक | Punjab National Bank
- I. प्रथम भारतीय बैंक | First Indian Bank
  - II. लाला हरकिशन | Lala Harkishan

- 6) 1 अप्रैल 1935 :- रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया | Reserve Bank of India
- I. आरबीआई एक्ट 1934 | RBI Act 1934
  - II. 5 करोड़ पूंजी | 5 crore capital
  - III. 1 जनवरी 1950 – राष्ट्रीयकरण | Nationalization

